# Vibrant Pushti

"जय श्री कृष्ण"

**"जय श्री गिरिराज"**
**"जय श्री कृष्ण"**
**"जय श्री वल्लभ"**
**"जय जय श्री गोकुलेश"**
**"जय श्री राधे"**

पुकार लिये, दर्शन कर लिये, दंडवत कर लिये, अभिषेक करा लिया, सेवा अर्चन करा लिया, चरण स्पर्श कर लिये तो क्या हमने पा लिये या उन्होंने हमें अपना लिया?

हमने कुछ जीत लिया या हम सबसे अधिक उत्कृष्ट हो गये?

नहीं नहीं और नहीं।

न दिखावो आडंबर ऐसा जो कोई न निकट आवे

न दिखावो उच्चतम इतना जो हर विचार कर्म में नीचा जाये

देखो सबमें वैष्णवता ऐसी जो हम वैष्णव होते जाये

यही वैष्णवता से जागेगी पुष्टि जो हर दिशा में श्री गिरिराज, श्री कृष्ण, श्री वल्लभ, श्री गोकुलेश, श्री राधे दर्शाये।

यही देखत दिशा दिशा तो हमारा जीवन जय जय हो जाये,

तब पुकारे

**"जय श्री गिरिराज"**
**"जय श्री कृष्ण"**
**"जय श्री वल्लभ"**
**"जय जय श्री गोकुलेश"**
**"जय श्री राधे"**

हर दिशा से प्रकटत् जाय।

**"Vibrant Pushti"**

खुद सो जाये उसे खुदा नहीं कह सकते

खुद को जगाये सबको जगाये वो ही खुदा है।

खुदा खुद होते है, खुद कहीं को खुदा कर सकते है।

खुदा के बंदे न कुछ बंधन में होते है न कुछ बांध ने देते है।

उडते है पंखी की तरह खिलते है फूल की तरह

बहते है नदी की तरह बरसते है बरसात की तरह

उगते है सूरज की तरह जागते है पंकज की तरह

**"Vibrant Pushti"**

सवेरा

जगाये कितने किरण जीवन जीने का

जगाये कितने नीत नूतन विचार जीने का

जगाये कितने सुनहरे अवसर जीने का

जगाये कितने शक्ति संचार जीवन जीने का

जगाये हर दिन का मौका करने कुछ जीने का

**"Vibrant Pushti"**

प्रार्थना करने से हमारे विचार शुद्ध होते है।

दर्शन करने से हमारा मन शुद्ध होता है।

कीर्तन करने से हमारा कर्म शुद्ध होता है।

मनोरथ करने से हमारा चित्त शुद्ध होता है।

परिक्रमा करने से हमारा तन मन शुद्ध होता है।

सेवा करने से हमारा आत्मा शुद्ध होता है।

सदा स्मरण करने से जीवन शुद्ध होता है।

**"Vibrant Pushti"**

बहुत सुनते सुनते मैं क्या हो गया?

अक्षर पढते पढते मैं क्या हो गया?

शिक्षा पाते पाते मैं क्या हो गया?

बडे होते होते मैं क्या हो गया?

क्रिया करते करते मैं क्या हो गया?

संस्कार सिंचते सिंचते मैं क्या हो गया?

जीवन जीते जीते मैं क्या हो गया?

समाज रचते रचते मैं क्या हो गया?

रिवाज में रहते रहते मैं क्या हो गया?

बातें करते करते मैं क्या हो गया?

प्यार करते करते मैं क्या हो गया?

नफरत करते करते मैं क्या हो गया?

नहीं पता मैं क्या हूँ और क्या होना है यह सोचते सोचते क्या हो गया?

**"Vibrant Pushti"**

हे परम पिता परमेश्वर!

वाह!

सुमाता और सुपिता यही है मेरी सेवा

सुपुत्र और सुपुत्री यही है मेरी भक्ति

एक ही छत साथ जीवन यही हमारे संस्कार

एक ही कुटुंब एक संकल्प यही हमारे विचार

कुछ भी आये कोई भी आये सब पाये सन्मान

फूल खिलायें रंग रंगाये यही हमारा जीवन

आनंद उत्सव हर पल रचाये यही हमारा मिलन

कृपा रखना सदा परमेश्वर जगत सर्वे को हमारा वंदन

**"Vibrant Pushti"**

कहते है उलझन सुलझे नहीं
उलझने उलझने है चारों तरफ
एक निपटायी दूसरी जागी
कैसी कैसी यह उलझने बनायी
रास्ता ढूँढे सुलझाने कोशिश करे
न उलझे न सुलझे न मिटती जाये
क्यूँ ये उलझन मुझे ही लिपटे
कैसी जीवन की रीत रचायी
नहीं नहीं ऐसे कैसे जाये उलझन
खुद ने बनायी खुद ने लिपटायी
खुद ने खुद के साथ मिलायी
क्यूँ छूटे क्यूँ सुलझे क्यूँ भागे
इच्छा हमारी खेवना हमारी
हमनें खेल खेल करके सजायी
खुद को घुमाया कुटुंब को नचाया
नहीं कहीं रिश्ते को भी बसाया
हर रिश्ते को तन धन में बांटा
रिश्ते रिश्ते तन मन धन में डूबोया
धर्म संस्कृति संस्कार ठुकराया
फिरते है सुंदर बोली बोलकर
उलझन उलझन पल पल जगाया
सारे संसार को खुद ने फँसाया
डूबते रहो उलझते रहो यही है हम
क्यूँ हारे क्यूँ छोडे हम नहीं है किसीसे कम

**"Vibrant Pushti"**

खुद के रंग में ऐसे रंगे है

न पहचाने औरो का रंग

खुद रंग को औरों पर बिखेरे

औरों को करे बेरंग

मतवाली दुनिया के कैसे कैसे रंग

हर रंग में न मिले किसीका रंग

फिरभी बिखरे खुद का रंग

खुद को न पहचाने खुद के रंग से

पल पल पहचाने औरों के रंग

बिरंगी दुनिया में खुद को मारे

औरों को जगाने करे कहीं अटकले

न खुद जागे न कोई और जागे

यु ही चिल्लाते भागे दौडे दुनिया में

जन्म जन्म जी कर ऐसे ही घवाये।

कौन जगाये किसको जगाये कैसे कैसे रीतो से जगाये

खोले रीत वेद प्रमाणित जो एक ही रंग बिखराये

सत्य वचन निष्ठा कर्म अपनायें वहीं प्रेम मार्ग कहलाये

**"Vibrant Pushti"**

यह सुबह यह शाम

यह धूप यह छाँव

यह दिन यह रात

क्या है?

यह प्रकृति की धाराएं है, ऐसी कहीं धारा है।

हम जितने भिन्न है उनसे कहीं बढ कर प्रकृति की धाराएं है।

भिन्न भिन्न प्रकार के हम

भिन्न भिन्न प्रकार के विचार

भिन्न भिन्न प्रकार की क्रिया

हर एक भिन्न प्रकार से साथ

वाह! क्या है हमारा पूर्ण स्वरूप?

प्रकृति की कोई भी धारा न कष्ट देती है और हमें कष्ट में परोती है।

आनंद ही इनका धर्म है

सुख ही उनकी पहचान है

जो पहचाने पल पल धारा

घडती है घडतर हमारा

हम होते है भक्त, संत, आचार्य और भगवान

यही है सुबह शाम, धूप छाँव, दिन रात और पूर्ण स्वरूप संकेत।

**"Vibrant Pushti"**

हर अक्षर का अर्थ करे
हर विचार का अर्थ करे
हर रचना का अर्थ करे
हर स्वर का अर्थ करे
हर सांस का अर्थ करे
हर डग का अर्थ करे
हर घडी का अर्थ करे
हर पल का अर्थ करे
हर पलक का अर्थ करे
हर नजर का अर्थ करे
हर रीत का अर्थ करे
हर बार का अर्थ करे
हर गूंज का अर्थ करे
हर महक का अर्थ करे
हर विरह का अर्थ करे
हर वेदना का अर्थ करे
हर किरण का अर्थ करे
हर बूँद का अर्थ करे
हर झलक का अर्थ करे
हर रिश्ता का अर्थ करे
हर तस्वीर का अर्थ करे
हर नाम का अर्थ करे
हर कर्म का अर्थ करे
हर जिज्ञासा का अर्थ करे
हर तकदीर का अर्थ करे
हर लीला का अर्थ करे
हर भाग्य का अर्थ करे
हर विद्या का अर्थ करे
हर भाव का अर्थ करे
हर ज्ञान का अर्थ करे
हर जीवन का अर्थ करे
तो केवल और केवल प्रीत ही है।
यही ही सर्वोपरि है, सर्वज्ञ है, स्वतंत्र है, शुद्ध है, सत्य है, परम मिलन है।

**"Vibrant Pushti"**

अहंकार को मारा

क्रोध को मारा

काम को मारा

मोह को मारा

लोभ को मारा

मद को मारा

आलस को मारा

अयोग्यता को मारा

कपट को मारा

व्यभिचार को मारा

"जय विजयादशमी"

केवल मनुष्य हो कर ही मनुष्य भगवान हो सकता है और देव केवल उनकी आराधना करता है।

कितना अदभुत है यह मनुष्य जन्म!

**"Vibrant Pushti"**

कैसा खेल है निराला
यह सोचो तो ऐसा
ऐसा न सोचो तो ऐसा
यह करो तो ऐसा
ऐसा न करो तो ऐसा
क्या सोचे क्या न सोचे
क्या करे क्या न करे
यही चक्कर में फसेला
किसीकी सोच किसीकी न सोच
किसीका कार्य किसीका न कार्य
यही चक्कर में घूमना
यह कहा ऐसा कहा
यह सुना ऐसा सुना
यही चक्कर में टकराया
न कुछ जाना न कुछ समझा
न खुद को पहचाना न खुद के आसपास को पहचाना
जाना नहीं फिर भी जीया
बार बार जन्म में लपटाया
यह सच वह झुठ
यही रमत में रंगाया
कैसा है यह जीवन जगत का
हर दिशा से किसीने खेला

**"Vibrant Pushti"**
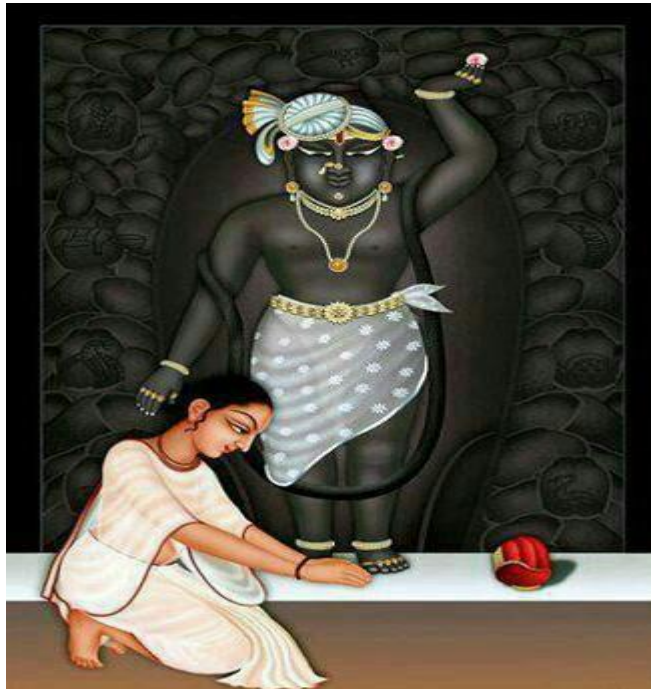
"मन चित्त बुद्धि और अहंकार" यह सर्वे हमारे साधन है। साधन हम खुद चुनते है और खुद बनाते है या दूसरे से लेते है। यही साधन हम हमें साथ देने हमारी सरलता के लिए रखते है। हमारी सरलता के साथ हमारा लक्ष्य को पाने के लिए ही हम रखते है।

यही साधन हमें शिखाये, हमें समझाये और हम वैसे रहे तो क्या क्या हो सकता है?

1. हमें साधन की तकनीक और साधन का योग्य उपयोग पहचाना तो हमें सही साथ मिल सकता है।

2. हम खुद साधन की तकनीक और उपयोग से अधुरे है तो अधुरा साथ मिलेगा।

3. हम योग्य है और हमें साधन को योग्यता से काम करवाने के काबिल है तो साधन और हमारा साथ उत्तम रहेगा और साथ लक्ष्य भी पूर्ण होगा।

4. हम साधन के आदी हो चुके और साधन के साथ साथ साधन की आज्ञा से रहने लगे तो जैसा साधन ऐसे हम।

5. साधन बाह्य सिंचन से जैसा बने ऐसे हम।

6. साधन जैसा कहे या करवाये ऐसे हम।

समझलो हम क्या है? कैसे है?

**"Vibrant Pushti"**

दर्शन करे जिसके हम तो क्यूँ दु:खडा रहे हमारे संग

कीर्तन करे जिसके हम तो क्यूँ रोग रहे हमारे अंग

सेवा करे जिसकी हम तो क्यूँ गरीबी रहे हमारे कुटुंब

सत्संग करे जिसका हम तो क्यूँ अज्ञान रहे हमारे मन

स्मरण करे जिसका हम तो क्यूँ माया रहे हमारे करम

आनंद करे जिससे हम तो क्यूँ न पाये परमानंद हम

विरह करे जिसका हम तो क्यूँ वंचित रहे परम प्रीत से हम

हमारी संस्कृति में हम पलक उघडते ही हमारे परम प्रिय प्रेमास्पद श्रीप्रभु को निहाले जिससे हम तन मन धन और हृदयस्थ में बिराजाते है

तो

दु:खडा क्यूँ आये?

रोग क्यूँ लागे?

गरीबी क्यूँ झेले?

अज्ञान क्यूँ भये?

माया क्यूँ लिपटे?

आनंद ही आनंद पाये - प्रीत से परमानंद हो जाये।

हर घडी झलक पाये - तन मन धन आत्म न्योछावर हो जाये।

**"Vibrant Pushti"**

मुझे श्री यमुना होना है

मुझे श्री गिरिराज होना है

मुझे श्री बैठकजी होना है

मुझे श्री व्रज रज होना है

मुझे श्री गौवा होना है

मुझे श्री भक्त का दास होना है

मुझे श्री वनस्पति होना है

मुझे श्री पूर्ण पुरुषोत्तम का विरह होना है।

**"Vibrant Pushti"**

इतने सारे असंख्य मनुष्यों के साथ जीते है तो भी हम नहीं पहचानते है यह सृष्टि को, रह प्रकृति को, यह जीवन को, हम खुद को।

इतने सारे असंख्य रीति और परीमिती के साथ रहते हुए, समय की धारा के साथ बहते हुए, तो भी हम नहीं पहचानते है यह सोच को, क्रिया को, हमारी व्यवस्था को, हमारी रहणी करणी को।

इतने सारे रिश्ते नाते, सगा सबंधी, दोस्तों, समाज, धर्म को अपनाते है तो भी हम असमंजस होते है, अज्ञानी होते है, नासमझ होते है, अयोग्य होते है।

संकल्प करे जीवन जीने का ऐसा

न कभी अयोग्य सोचेंगे न अयोग्य करेंगे

न कभी स्वार्थ रचेंगे न स्वार्थ वृत्ति रखेंगे

न कभी आत्मीय सिद्धांत छोडेंगे न तोडेंगे

न कभी दूसरे के सहारे जीयेंगे न जीने देंगे

न कभी प्रकृति की समतुला तोडेंगे न बोयेंगे

न कभी जूठ कहेंगे न कभी सुनेंगे

न कभी अधर्म का आचरण करेंगे और करने देंगे

हर सांस है मेरी हर सृष्टि है मेरी हर अधिकार है मेरा

तो क्यूँ मैं फिरु मारा मारा क्यूँ जीना बेचारा क्यूँ बनु किसीका लूटारा

**"Vibrant Pushti"**

"श्री कृष्ण" तो हर पल है हमारे साथ, हमें अर्जुन समझ कर हर पल गीता ज्ञान की गंगा का सिंचन करते रहते है और सदा भक्तों के संकट मोचन बने रहते है।

पर

कहीं डूबकी लगाई गंगा स्नान की

मैली हो गई गंगा सारी

न शुद्ध हुए तन मन हमारे

कैसा घाट घडा है जीवन का

पल पल संस्कार बिछडत जाये

क्या है यह नयनों में जो द्रष्टि अशुद्धियाँ दिखाये

क्या है यह तन में जो बार बार रोग पसराये

क्या है यह विचार में जो हम सबको बहुत लूटाये

क्या है यह कर्म में जो अशिक्षित फल खिलाये

हम गाये

जागो मोहन प्यारे!

जो जागे हर पल प्यार में

हम न जागे कोई पल

फिर भी बार बार हमें जगाये।

**"Vibrant Pushti"**

"पृथ्वी"

पृथक पृथक संस्कार सिंचन करे

पृथक पृथक उत्कृष्ट जीवन जगाये

पृथक पृथक सत्य संकेत करे

पृथक पृथक प्रकृति आनंद लहराये

पृथक पृथक दुष्ट संहार करे

पृथक पृथक धैर्य कर्म दर्शाये

पृथक पृथक आरोग्य औषधि भरे

पृथक पृथक कोमल मार्ग पथराये

पृथक पृथक तत्व शरण सेव्य करे

पृथक पृथक अखंड प्रीत प्रकटाये

पृथक पृथक रज रज भक्ति पुकारे

पृथक पृथक कण कण अन्न उगाये

पृथक पृथक आर्त भक्ति प्रजवलाये

पृथक पृथक श्वास परमात्मा जन्माये

**"Vibrant Pushti"**
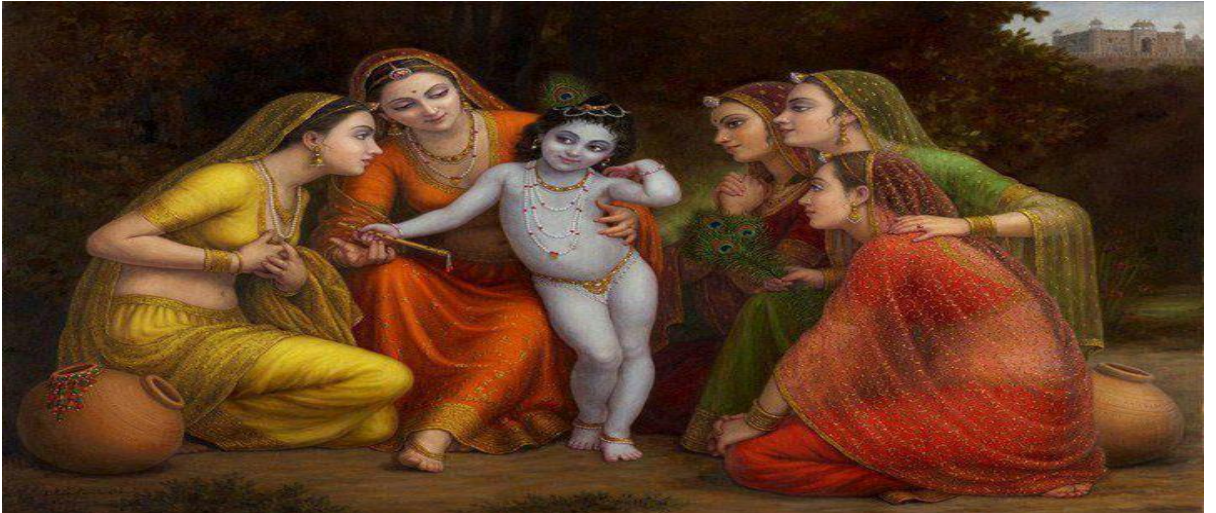
कौन है हम?

व्यक्ति या आदमी

संस्कृत या अज्ञानी

शिष्ट या अशिष्ट

पूर्ण या अधूरे

शिक्षित या अशिक्षित

मर्यादा या अमर्यादित

समझभरे या नासमझ

योग्य या अयोग्य

कर्मी या आलसी

ज्ञानी या मूढ

शुद्ध या अशुद्ध

पाक या नापाक

निस्वार्थी या स्वार्थी

निरोगी या रोगी

मनुष्य जीवन या पशु जीवन

मार्ग दर्शी या मार्ग विरोधी

धर्मी या विधर्मी

**"Vibrant Pushti"**

क्यूँ जगाये यह सुबह रहते निर्मल नींद से

क्यूँ जगाये यह सूरज रहते नीरव रात्रि से

क्यूँ जगाये यह मंदिर रहते निर्जन आवास से

क्यूँ जगाये यह आंतर रहते आलस जीवन से

सच

सोने दो सोने दो न जगावो न जगावो

न जगावो मुझे मेरे यह जीवन से।

क्यूँ न जगाये!

नहीं जागना है यह अंधकार भरी दुनिया में

नहीं जागना है यह स्वार्थ भरे संसार में

नहीं जागना है यह जूठ कहने वाले मनुष्यों में

नहीं जागना है यह हर पल जीवन लूटने वालो में

नहीं जागना है यह निष्ठुर धर्म अपनाने वालो में

ओहहह!

नहीं नहीं न कुछ ऐसा सोचों न कुछ ऐसा करो

जागो चोक्कस जागो हर एक को जागना ही है

यह पल से जागो जागके अंधकार अज्ञान को भगावो

जागो अचूक जागो

**"Vibrant Pushti"**

हे श्री वल्लभ! आपने हमें संस्कार की श्री पुष्टि प्रदान करी,

हे धरती माता! आपने हमें परम ज्ञान की श्री गंगाजी प्रदान करी,

हे श्री परब्रह्म! आपने हमें परम भक्ति की श्री यमुनाजी प्रदान करी,

हे श्री ब्रह्माजी! आपने हमें परम साक्षरता की श्री सरस्वतीजी प्रदान करी,

आपके होते हुए अंश भी आप सर्वे को प्रणाम करते है और वचन देते है की

हम भी हमारे कर्म से हम सदा विशुद्ध श्री लक्ष्मीजी आपको प्रदान करेंगे।

श्री लक्ष्मीजी का प्राकट्य तब ही होतो है जब

हमारा जीवन संस्कार पुष्टि हो

हमारा जन्म परम ज्ञान सिंचन गंगा हो

हमारी हर क्षण नित्य परम भक्ति यमुना हो

हमारा हर विचार परम साक्षरता की सरस्वती हो

हमारा हर कर्म परम शुद्ध पवित्र श्री लक्ष्मीजी हो

हमारे घर या ने तन मन चित्त और आत्म में सदा श्री लक्ष्मीजी का आवास रहे, यही आवास से परम प्रिय प्रियतम श्रीप्रभु हमारे हृदय में बिराजे।

यही है हमारी परम शुभ दिपावली!

**"Vibrant Pushti"**

हे दिपक! कैसे उद्दीपन होता है?

तिमिर तुटे जागे उजाला

कौनसी रीत से उजागर होये?

हे दिपक कैसे उद्दीपन होये?

सच कितना सरल और सहज है कि हम हररोज दिपक प्रकटाये और हररोज बुझादे!

कैसी है हमारी समझ - ज्ञान - संस्कृति!

जगाने के बाद बुझे

प्रकटाने के बाद बुझे

उजागर करने के बाद बुझे

कैसे दिपक जलाये जो बार बार सुलगाये

दिपक न जलावो न सुलगावो

दिपक को प्रकटावो जगावो उद्दीपावो

जो कदी न बुझे कदी न तिमिर बसाये

दिप। दिपावली की रीत यही है

तन मन ज्योत जगावो

आंगन आंगन दिप प्रकटावो

हो ऊजागर जीवन मेरा

भागे तिमिर मोह माया स्वार्थ का मेला

प्रीत जागे ज्योति जागे झगमग आत्म मेरा।

"शुभ दिपावली"

**"Vibrant Pushti"**

अनेक दिपो से रचाती है दिपावली
खुद के तेजोमय करने से प्रकट है दिपावली
मन तेजोमय तन तेजोमय तेजोमय हर विचार
कर्म की रीति से झगमग है दिपावली
संस्कार तेजोमय शृंगार तेजोमय तेजोमय हर नजर
प्रकृति की रीति से झगझग है दिपावली
साथ तेजोमय आधार तेजोमय तेजोमय हर प्रहर
सृष्टि की गति से झगमग है दिपावली
श्वास तेजोमय विश्वास तेजोमय तेजोमय हर आकाश
जीवन की नीति से झगझग है दिपावली

हर दिपक में विनय है
हर दिपक में भक्ति है
हर दिपक में कृपा है
हर दिपक में शिस्त है
हर दिपक में रक्षण है
हर दिपक में प्रेम है
हर दिपक में धर्म है
हर दिपक में समानता है
हर दिपक में समर्थन है
हर दिपक में विशुद्धता है
हर दिपक में आयोजन है

हर दिपक में ज्ञान है
हर दिपक में क्षमा है
हर दिपक में शिक्षा है
हर दिपक में करुणा है
हर दिपक में आनंद है
हर दिपक में सेवा है
हर दिपक में ऐकता है
हर दिपक में निस्वार्थ है
हर दिपक में समर्पण है
हर दिपक में पवित्रता है
रचाता है दिपक

**धरती का कर्तव्य (मिट्टी) से**
**सागर का मंथन (तेल) से**
**आकाश का आधार (आकार) से**
**वायु का रक्षण (सिंचन) से**
**वनस्पति के साथ (दिवेट) से**
**सूरज के तेज (ज्योति) से**
**उजाला ही उजाला है हमारा जीवन**
**"Vibrant Pushti"**
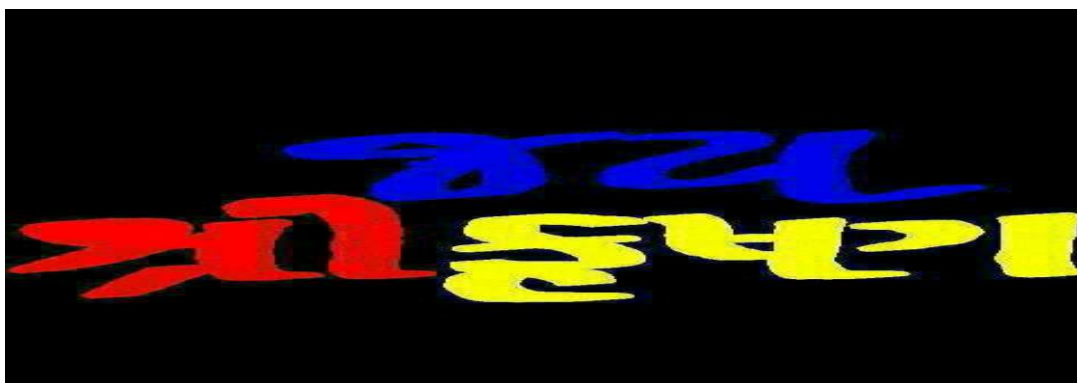
आकाश भरके लाया कहीं सितारें नूतन वर्ष में लूटाने के लिए

धरती भरके लायी कहीं धन धान्य नूतन वर्ष में लूटाने के लिए

सागर भरके लाया कहीं रत्नों नूतन वर्ष में लूटाने के लिए

सूरज भरके लाया कहीं किरणों नूतन वर्ष में लूटाने के लिए

वायु भरके लाया कहीं सुगंध नूतन वर्ष में लूटाने के लिए

लूटे ऐसे ऐसे संकल्पो से जो हर पल नित नूतन हो जाये

हर लूट सार्थक हो जाये जो तन मन धन पवित्र हो जाय

हर लूट विशुद्ध हो जाये जो हर विचार योग्य हो जाय

हर लूट भक्ति हो जाये जो हर क्षण मेरा प्रिय निकट हो जाय

हर लूट साक्षर हो जाये जो हर क्रिया संस्कृत हो जाय

हर लूट प्रीत हो जाये जो हर श्वास मेरे श्रीप्रभु में समर्पण हो जाय।

**"Vibrant Pushti"**

दीपावली के हर किरणों ने मेरी सुध बुध ली

दीपावली की हर महक ने मेरी रोम रोम छू ली

दीपावली के हर उमंग ने मेरी अंगडाईओ तरास ली

किरणों से मेरी पल पल जागी

महक से मेरा रोम रोम महका

उमंग से मेरा अंग अंग थनका

भर दिया इतना ओजस के हर अंधेरा दूर हो गया

कर दिया इतना खुबसूरत के सबकुछ सुंदर हो गया

भर दिया इतना आनंद की जीवन सुनहरा कर दिया

आप सर्वे के लिए यही प्रार्थना

"शुभ दीपावली जागृत दीपावली"

**"Vibrant Pushti"**

"मंगलाचरण" से प्रभु पधारे द्वार हमारे

यही दीपावली की शुभ शुभ रीत

दीप प्रकटे तो तन मन धन जागे

जागे तेज जागे उमंग दूर दर तिमिर भागे

ऐसी है ये दीपावली नव नव नूतन दीन जागे

हम भी जागे जीवन प्रकटाके नीत नीत आत्म जागे

एक एक जागे मिलके जागे

दीपमाला सजाकर प्रियतम पुकारे

ज्योत ज्योत प्रकटाये मिलन प्रभु पधारे

"मंगलाचरण"

"श्री वल्लभाचार्यजी" के शिक्षात्मक प्रेरणा से

पुष्टिमार्ग के सिद्धांत आधारित

प्रथम आप सर्वे को प्रणाम करते है।

"जय श्री कृष्ण"

मंगल आचरण प्रमाण है जो खुद के जीवन के सिद्धांत का, दिशा है खुद के अनुभूत सिद्धियों के, मार्ग है खुद के आंतरिक सलामती का, सामर्थ्य है हर एक क्षण का, सार्थकता है जन्म जन्मातंर का।

हर एक के जीवन में मंगलाचरण पूर्णता से आवश्यक है, जिसका जीवन मंगलाचरण विहीन है वह जीव तत्व अयोग्य है।

मंगलाचरण शिष्टाचार है, मंगलाचरण संस्कृत जीवन का संयम - नियम और समतुलन है, जिससे आत्म तत्व खुद की पहचान कराता है।

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने जो मंगलाचरण रचा है वह समझ कर हम खुद अपना मंगलाचरण की रचना करना योग्य है।

"श्री वल्लभाचार्यजी" विरचित मंगलाचरण

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ।

लक्ष्मीसहस्त्रलीलाभि: सेव्यमानं कलानिधिम् ।।

चतुर्भिश्य चतुर्भिश्य चतुर्भिश्य त्रिभिस्तथा ।

षड्भिर्विराजते योऽसौ पंचदध्या हृदये मम ।।

अति श्रेष्ठ प्रमाणित, सिद्धांत अर्थी, सिद्धि अनुभित, योग्य दिशा निर्देशित, संपूर्ण सलामत, काल सामर्थ्यिक, जन्म सार्थक मंगलाचरण है।

मंगल + आचरण

जीवन में मंगल आचरण सिर्फ और सिर्फ खुद की जागृतता से ही आता है और यह जागृतता सिंचन पाती है योग्य संस्कार, शिक्षा, भक्ति, सिद्धांत, समझ, निडर और शिस्त से सिद्ध होती है, जिससे जीवन वृद्धि में साक्षरता, पवित्रता, शुद्धता, नम्रता, दीनता, दासत्वता प्रकट होती है और हमारा आत्म तत्व जागृत होता है हम खुद को पहचानने लगते है, इसलिए मंगलाचरण श्रेष्ठ प्रमाणित, सिद्धांत अर्थी, सिद्धि अनुभित, योग्य दिशा निर्देशित, संपूर्ण सलामत, काल सामर्थ्यिक, जन्म सार्थक है।

"नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् । लक्ष्मीसहस्त्रलीलाभि: सेव्यमानं कलानिधिम् ।।"

यह प्रथम कारिका में "श्री वल्लभाचार्यजी" कहते है -

मैं सदा नमन करता हूँ यही सर्वोत्तम पुरुषोत्तम आत्म तत्व को - सर्वात्मभाव और दासत्व स्वीकार करके मेरे हृदय में विशुद्धता से मधुरानंद स्वरुप प्रकट करके बिराजते है, जो पुरुषोत्तम स्वरुप सदा नित्य लीला करते करते निजजनों और शिष्टाचार आत्म तत्वों का साक्षातकार करते रहते है खुद की प्रीति से स्पर्श करते रहते है।

कितनी अलौकिक और अखंडित कृपा या ने संयोजन जिससे उनके हृदय या ने उनका आत्म तत्व को हर कर उनके आत्म तत्व से जोड देते है, सदा हृदय की शैय्या पर शयन करते है - शयन करना या ने स्थिर रहना।
ओहहह! अति अलौकिक!
स्थिर रहना या ने अपने प्रिय में स्थिति स्थापत्य का निर्माण करना। नित्य लीला में बसना। प्रीत लीला का क्षीर सागर का मधुर रस पीलाना।
प्रीत रस का पान से सहस्र प्रियतम आत्म तत्वों से एक साथ जुडना जिससे अनगिनत प्रकार की लक्ष्मीजी या ने प्रीत रीत की कलाओं का सामर्थ्य पाना जिससे खुद निधि स्वरुप में परिवर्तन हो कर सदा सेव्यता प्राप्त करते है वो ही आत्म तत्व को मैं नमन करता हूँ।

समझना - "श्री वल्लभाचार्यजी" करते है और हमें पहचान करवाते है अति सर्वाधिक सर्वोच्च आत्म तत्व का।
कितनी अनोखी यह निरोध लीला है "श्री पूर्ण पुरुषोत्तम" की!
अदभुत!
"श्री वल्लभाचार्यजी" का सर्वज्ञात मंगलाचरण!
नमन करु श्री वल्लभाचार्यजी" ने सदा साथ साथ राखजो!
मंगल आचरण का स्पर्श अचूक करना ही है,

हर अक्षर अक्षय कर रहे है, हर भाव उमंग भर रहे है, हर ज्ञान जागृत कर रहे है, हर अर्थ दिशा की ओर बढा रहे है, आंतरिक परिवर्तन से बाह्य सलामती बढा रहे है। एक नित्य की ओर गति कर रहे है, हमारी द्रडता से हममें दीनता प्रदान कर रहा है।

अवश्य चिंतन करे यह विनंती है, कहीं विडंबना दूर हो कर हममें शांति के अंकुर खिलेंगे, यही सामर्थ्यता है "मंगलाचरण" में।

"मंगलाचरण" = मंगल आचरण

मंगल उसे कहते है जो हर क्षण मंगल है,

हर तरह से मंगल है,

हर सर्जन से मंगल है,

हर लीला से मंगल है,

हर ह्रदय से मंगल है,

हर द्दष्टि से मंगल है,

हर सृष्टि से मंगल है,

हर परिमीती से मंगल है,

हर रीति से मंगल है,

हर कृति से मंगल है,

हर संयोग से मंगल है,

हर अंतर से मंगल है,

हर चर्चा से मंगल है,

हर धारा से मंगल है,

हर नियमन से मंगल है।

तो

हर आचरण मंगल होगा,

हर आवरण मंगल होगा,

हर संक्रमण मंगल होगा,

हर आमंत्रण मंगल होगा,

हर आकर्षण मंगल होगा,

हर परिमाण मंगल होग,

हर जागरण मंगल होगा,

हर निर्माण मंगल होगा,

हर स्मरण मंगल होगा,

हर नियंत्रण मंगल होगा,

हर प्रकरण मंगल होगा,

हर व्याकरण मंगल होगा,

हर आक्रमण मंगल होगा,

हर विस्तरण मंगल होगा,

हर चरण मंगल होगा,

हर धरण मंगल होगा,

हर शरण मंगल होगा,

हर वरण मंगल होगा,

हर रक्षण मंगल होगा,

हर कण मंगल होगा,

हर क्षण मंगल होगा,

हर आचमन मंगल होगा,

हर संगठन मंगल होगा,

हर दर्शन मंगल होगा,

हर अमन मंगल होगा,

हर चमन मंगल होगा,

हर आगमन मंगल होगा,

हर नियमन मंगल होगा,

हर आयोजन मंगल होगा,

हर साधन मंगल होगा,

हर वर्तमान मंगल होगा,

हर सन्मान मंगल होगा,

हर कीर्तन मंगल होगा,

हर मंथन मंगल होगा,

हर चितवन मंगल होगा,

हर चिंतन मंगल होगा,

हर नयन मंगल होगा,

हर तन मंगल होगा,

हर धन मंगल होगा,

हर मन मंगल होगा,

हर वंदन मंगल होगा,

हर जीवन मंगल होगा,

हर मिलन मंगल होगा,

हर विज्ञान मंगल होगा,

हर परिवर्तन मंगल होगा,

हर आंगन मंगल होगा,

हर अंतरंग मंगल होगा,

हर रंग मंगल होगा,

हर तरंग मंगल होगा,

हर संग मंगल होगा,

"मंगलाचरण" से सर्वत्र मंगल,

सर्वे मंगल मांगल्य

यही ही हमें समझना है और समझ कर अपनाना है और अपनाकर पाना है।

"मंगलाचरण" की सिद्धि अखंड है, अजोड है, अनोखी है, अनन्य है, अनंत है।

मंगल आचरण से

चरण शुद्ध होता है

चरण या ने

हमारे विचार

हमारे आचार

हमारा मन

हमारा तन

हमारा धन

हमारा हर डग योग्य, निडर, धैर्य, निखालस, विनम्र, सरल, उत्तम रहता है। जिससे जीवन संस्कृत और समृद्ध होता है।

चरण के कहीं अर्थ होते है।

चरण - चलना

चरण - गति करना

चरण - सदा चरना या ने कुछ न कुछ करते रहना

चरण - समझ कर ही करना

यही चरण से "आ" जुडे तो निश्चिंतता

निरंतरता

निस्वार्थता

अचूकता

अडगता

अखंडता से ही सर्व करना

इसलिए ही आचरण

आचरण में मंगल!

ओहहह!

केवल विशुद्धता

केवल सूक्ष्मता

केवल संतोष

केवल विश्वास

केवल निर्लिप्त

केवल निर्मल

केवल ज्ञान

केवल भक्ति

केवल प्रेम - केवल समर्पण - केवल शरणागत

यही सर्वोत्तमता है आचरण की।

"चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा।

षड्भिर्विराजते योऽसौ पन्च्यधा हृदये मम।।"

चतुर्भिश्च - प्रथम चार प्रकार के रुप

चतुर्भिश्च - दूसरे चार प्रकार के रुप

चतुर्भिश्च - तिसरे चार प्रकार के रुप

मूल तत्व या ने श्री पूर्ण पुरुषोत्तम ने प्रथम चार प्रकार के रुप धारण किए

मूल तत्व या ने श्री पूर्ण पुरुषोत्तम ने दूसरे चार प्रकार के रूप धारण किए

मूल तत्व या ने श्री पूर्ण पुरुषोत्तम ने तिसरे चार प्रकार के रुप धारण किए

यह प्रथम चार प्रकार के रुप श्री प्रभु के जगत रुप से रुप प्रकट किया है। जगत रुप या ने जैसे जगत है - जगत में है उसी की तरह रुप

जैसे हम जीते है और यही जीवन जीते जीते सर्वोत्तमता ग्रहण करके, योग्य अयोग्य पहचान कर अयोग्यता को नष्ट करना। जिससे जगत के अज्ञान का नष्ट होना।

यह रुप में जगत रुप का प्राकट्य का हेतु,

यह रुप में जगत रुप के प्राकट्य की लीला या ने पद्धति,

यह रुप में जगत रुप की भिन्नता के आधार अनुसंधान भिन्न भिन्न रुप धरना,

यह रुप में जगत रुप के कहीं प्रकार की अनीति, अज्ञानी, अंधकार सभर कापट्य विषयों और वृत्ति के रीत से रुप धरना, जैसे पूतना का नाश, अघासुर का नाश, आदि।

ऐसे प्रथम चतुर्भिश्च स्वरूप धारण प्राकट्य को "श्री वल्लभाचार्यजी" नमन करते है

"मंगलाचरण" का अति गूढ रहस्य हमें प्रदान करके हमें अनेक संकेत करते है और जगत रुप और जगत की सही समझ ज्ञात करते है।

"शत् शत् नमन श्री वल्लभाचार्यजी" को।"

**"Vibrant Pushti"**

सूरज भी चाहता है

आकाश भी चाहता है

सागर भी चाहता है

वायु भी चाहता है

धरती भी चाहती है

कोई तो है जिससे मुझे आंतर आनंद मिले और वह खोजता रहता है, तडपता रहता है, इंतजार करता रहता है, कहीं पलों से, कहीं गति से, कहीं दिशाओं से, कहीं कालों से।

क्षण भर का भी आनंद उन्हें अति वेग शिल करता है और अधिक आनंद के लिए मेहनत करता रहता है।

यही रहस्य हमें जानना है की यह निरंतर है?

अगर है तो हमें ऐसे परिपक्व खुद होना है नहीं कोई दूसरे की अभिलाषा या भावना का सहारा लेना है।

इसलिए तो

सूरज अकेले

आकाश अकेले

सागर अकेले

वायु अकेले

धरती अकेले

झझुमते रहते है, और वो ही सबकुछ पाते है और आनंद उर्मि जगाते है और आनंद आनंद सृष्टि को रचते है।

**"Vibrant Pushti"**

दर्द क्या है? क्या कोई एहसास है या कोई अनुभूति है या कोई क्रिया का परिणाम है या कोई निश्वास है या कोई संकेत है।

जब होता है कोई अकल्पनीय एहसास या अनुभूति या कोई परिणाम या कोई संकेत तो हम क्या क्या नहीं करते है?

तब तन तुटता है मन घुटता है और कहीं उपचार या उपायों में लग जाते है, जिससे न समतुलन बिगडे और धैर्य के साथ रहने लगते है।

यही धैर्य में जो कुछ जागता है वह संकेत है,

यही धैर्य में जो पल रह कर वही दर्द को भूल कर फिर वही दर्द में लपटाते है वह निश्वास है,

यही धैर्य में हम जो पल बिताते है वह दर्द का एहसास है,

यही दर्द हम समझते समझते लिपलाटे रहे तो हमें भाता है दर्द के पहचान की,

यही दर्द को हम बार बार झेले वह हमारे जीवन शैली का परिणाम है।

हम संकेत समझे तो दर्द दूर होगा

हम निश्वास समझे तो अंधश्रद्धा होगी

हम एहसास समझे तो कोई नासमझ होगी

हम अनुभूति समझे तो अपनापन होगा

हम परिणाम समझे तो कोई परिवर्तन की मांग है।

**"Vibrant Pushti"**

जगत में कितनी भिन्नता है,

प्रकृति की, वनस्पति की, जल की, धरती की, वायु की, मनुष्य की, पशु की, पंछी की, फूलों की, ब्रह्मांड की, धर्म की, विश्वास की, श्रेष्ठता की, समाज की, नीति नियमों की, रहणी करणी की, जीवन की, विचार की, रीत की, क्रिया की, मान्यता की, अनुभूति की, रंग की, तरंग की, समझ की, शिक्षा की, अपने की, सबंध की, और कहीं कहीं है।

यही भिन्नता में भी हम जब अकेले, शांत, सरल और निर्मलता से बैठते है तब हम कोई एक तत्व पर केन्द्रित होते है या आकर्षित होते है या कोई तत्व की पुकार हम सुनते है या कहीं से संकेत या सांत्वना पाते है तब ऐसी अनुभूति होती है की कोई ऐसा तत्व है जो हमें खिंचता है।

यह शरीर है, मन है, इन्द्रियां है भिन्न है तो भी आकर्षित होते है तो यह आकर्षित कौन होता है? हमारे तन मन धन में कौनसा तत्व हमें आकर्षित करता है, जागृत करता है? यह तत्व हर एक में है, हर क्षण - हर कण - हर बिन्दु में है और वह व्यापक है पर भिन्न नहीं है। यही तत्व को आत्म तत्व कहते है। जो हर आत्म तत्व से आकर्षित होता है और हर तत्व को आकर्षित करता है।

यही तत्व को आत्म तत्व समझते है, पहचान होती है। जो परमात्मा से ही छूटती है और परमात्मा में ही जुडती है। जो सब में एक ही प्रकार की है, जो तन मन धन उनकी साक्षरता से यह आत्म तत्व को तेजोमय करके खुद के जन्म और जीवन को धन्य कर सकते है।

कोटि कोटि प्रकार के तन मन में एक ही प्रकार की आत्मा रहती है। जो खुद को सैद्धांतिक जीवन से जीने में आत्मा योग्य करते है। हर जीवन मधुर हो जाता है।

**"Vibrant Pushti"**
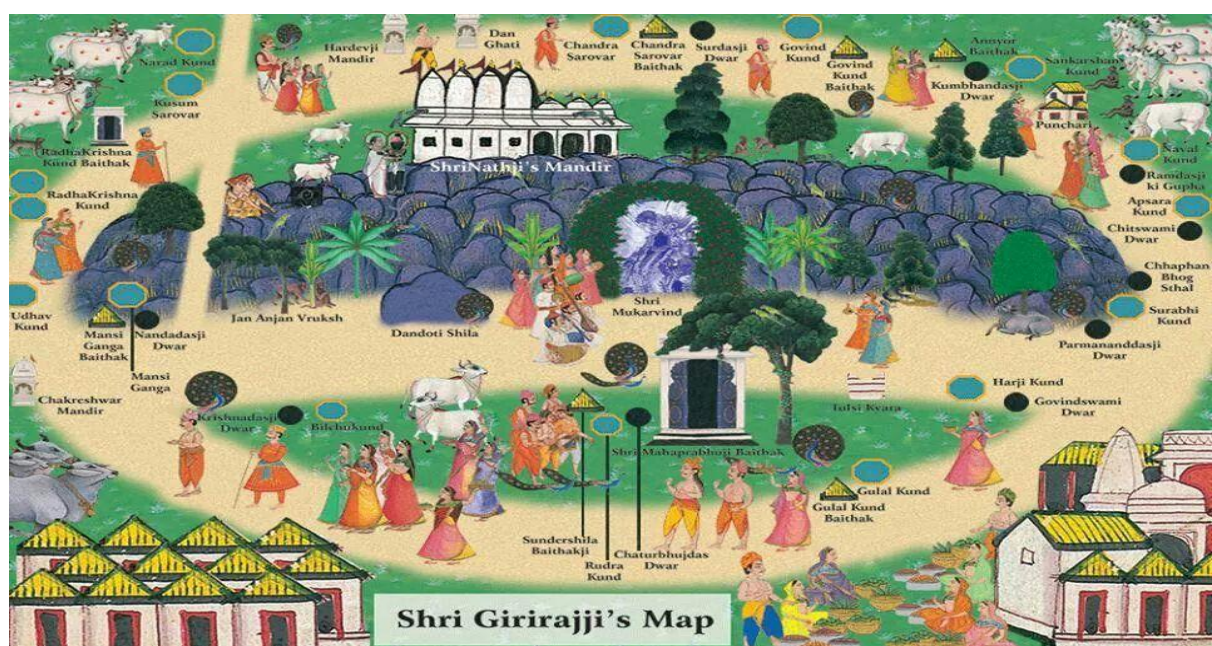
जीवन जीते जीते जीवन पढना है समझना है और जागना है।

जीते जीते पढना है तो हर दिन में कहीं पल ऐसी निकालो जिसमें सिर्फ अकेले बाह्य और आंतरिकता से पूरे तन मन को पढो, पढते पढते जगत के योग्य चरित्रों से तरासो, तरासते तरासते खुद को समझ कर जागते जाव, यह जागना ही अपना स्वाध्याय है।

**"Vibrant Pushti"**
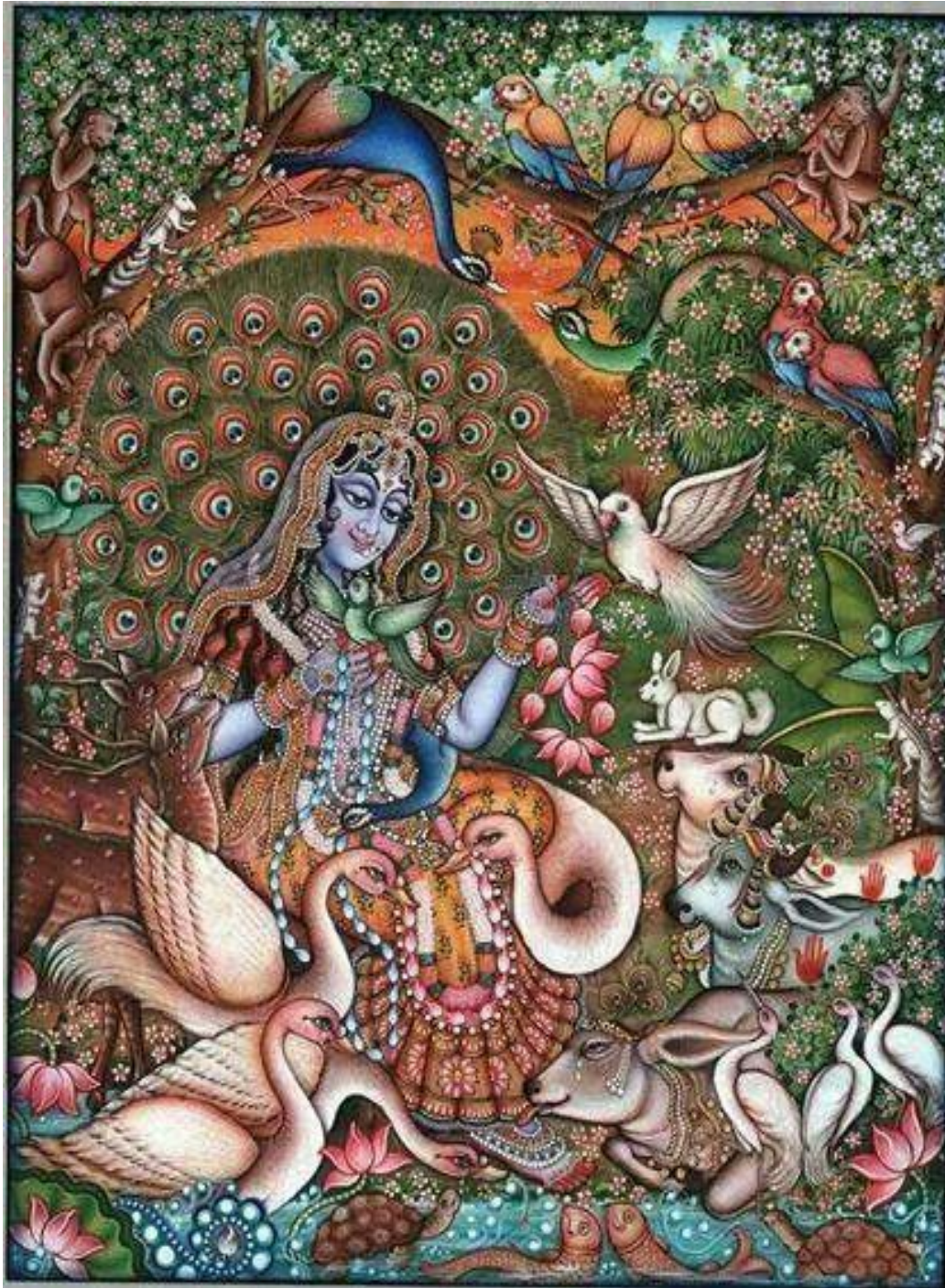
जीवन की करुणा

जीते जीते न कोई अपना

मरते मरते भी न कोई अपना

तो क्या करे?

जगत में है तो ऐसे खुद को घडे

न कोई अपना तो हम सबके

कोई जीये तो उनके

कोई मरे तो भी उनके

कैसे

जैसे भक्त

जैसे संत

जैसे नदी

जैसे विश्वास का विग्रह।

**"Vibrant Pushti"**

हमने हमारी मानसिकता

हमने हमारी शारीरिकता को ऐसी उजागर करते है की हम नहीं जानते है की हम क्या है?

क्यूँ है?

क्या करते है?

क्यूँ करते है?

ऐसे जीने से या रहने से क्या होगा और हो रहा है?

यूँ ही जीते जा रहे है

क्या कर रहे है,

कहाँ जा रहे है

क्या पा रहे है,

क्या हालत घड रहे है?

सब अपनी मस्ती में मस्त।

उठते है

बस करते रहते है जो मन में आया

होता रहता है जो तन से होता है।

जो कोई विचार जागे तो ऐसा

जो कोई कहे तो ऐसा

न खबर है - न ध्यान है - न जानते है - न पहचानते है - करते रहते है

समय को बहने देते है।

धर्म क्या है? वह आसपास जो करे और कहे वह धर्म है।

रीति रिवाज क्या है? जो जिसके मन की रीत से जागे वह रीति रिवाज और समाज है।

जीते रहते है भौतिक सांस्कृतिक से

जीते है भौतिक सुख से

जीते है भौतिक विज्ञान साधन से

जीते है भौतिक सेवा से

जीते है भौतिक हरीफाई से

जीते है भौतिक खींचा तानी से

जीते है भौतिक द्रष्टि से

जीते हैै भौतिक संकल्प से

जीते है भौतिक सर्जन से

भौतिक का अर्थ है - जिसका क्षणिक में सुख हो और क्षणिक में नाश हो।

यही करते करते हम खुद को, खद के हर जन्म को, खुद के हर मौका को हम गँवा देते है।

न खुद जागते है और न औरों को जगाते है,

न औरों से जागते है और न औरों को साथ देते है,

खुद को मारते है और औरों को मारते जाते है।

न कोई भय है, न कोई डर है,

न कोई जिज्ञासा है, न कोई धारणा है,

ऐसे निरखते निरखते सोते रहना है।

यही है हम!

यही है हम!

यही है हम!

**"Vibrant Pushti"**

अगर जागना है - जीना है

तो

सूरज का किरण छू लो

नदी का नीर छू लो

आकाश का रंग छू लो

सागर का बूंद छू लो

धरती की रज छू लो

वायु की लहर छू लो

फूलों की महक छू लो

पंखी की उडान छू लो

वनस्पति के पत्ते छू लो

मनुष्य की आत्म छू लो

श्री प्रभु की प्रीत छू लो ।।

**"Vibrant Pushti"**

"मृत्यु बुद्धिमतापोह्यो यावद्बु द्धिबलोदयम् ।

यद्यसौ न निवतेर्त नापराधोस्ति देहिन:।।

बुद्धि योग्य मनुष्य मृत्यु को सदा दूर करते है या मृत्यु को जीतने का प्रयत्न करते रहते है, अगर जो मनुष्य मृत्यु को नहीं जीत सकता वह मनुष्य कैसे कहें लायेगा? सृष्टि में बुद्धिमान आत्म तत्व केवल मनुष्य ही है और मनुष्य ही अपनी संपन्नता से योग्य साधनों का उपयोग करके सर्वथा उचित कर सकता है, अगर जो मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता वह पशु समान है क्यूँकी पशु में ऐसी बुद्धि प्रदान नहीं है जितनी मनुष्य में है।

हमें कहीं बार कहीं मौके मिलते ही है और यही हर मौके में कुछ कुछ संकेत और शिक्षा पाते ही है फिरभी हम ऐसे मौके सामान्यता से गँवा दे तो हम कौन?

हम जो भी उपाय करते है उनमें साथ भी मनुष्य का ही लेते है और रखते है।

यही उच्चता है मनुष्य की और मनुष्य जीवन की। हर शोध, हर पद्धति, हर विचार और क्रिया में वृद्धि और संशोधन, उपाय यही विश्वास के साथ ही करते है। यही तो जीवन की सार्थकता और प्रमाणितता है तो क्यूँ हारे, क्यूँ डरे, क्यूँ नासीपास, क्यूँ अज्ञानी, क्यूँ असमंजस में रहे?

हर विचार से

हर समझ से

हर क्रिया से

हर निष्ठा से

हर रीत से

हर पद्धति से

हर संकल्प से

हर निर्णय से

सरल, निखालस, शुद्ध, संस्कृत, निडर हो कर क्यूँ न जीये आनंद में!

**"Vibrant Pushti"**

हम दीन ब दीन अल्प जीवी हो रहे है। हम दीन ब दीन रोगी हो रहे है। हम दीन ब दीन भोगी हो रहे है।

क्यूं?

कलियुग है। ओहहह! कलियुग क्यूं है? हम कलियुग में क्यूं है?

हम कलियुग में है तो हमें क्या करना चाहिए? जो समय में काल का प्रभाव अति वह युग कलियुग।

काल का प्रभाव क्यूं अति है?

काल क्या हमें असंस्कृत करता है?

काल क्या हमें अज्ञानी करता है?

काल क्या हमें निष्ठुर करता है?

काल क्या हमें अविश्वासु बनाता है?

काल क्या हमें अनीति शिखाता है?

काल क्या हमें स्वार्थी बनाता है?

काल क्या हमें जूठ कहना कहता है?

काल क्या हमें असमंजस में रहना जताता है?

काल क्या हमें दया हीन का सिंचन करता है?

काल क्या हमें अधर्मी होना शिखाता है?

काल क्या कुसंग जगाता है?

काल क्या कुसंप कराता है?

काल क्या हमें आडंबर बनाता है?

काल क्या हमें दोषी बनाता है?

नहीं नहीँ!

गलत! बिलकुल गलत!

कैसा चित्रण और निरुपण!

काल तो अलौकिक है।

काल तो अदभुत परिवर्तित है।

काल तो अति उत्तम और शिक्षित है।

काल तो संस्कृत उपाध्यक्ष है।

काल तो अमृत धारा है।

काल तो सत्य का प्रतिनिधि है।

काल तो सर्वे का अनोखा प्रमाण है।

काल तो सत्संग है।

काल तो सरल और निर्मल है।

काल तो सदाचार और शुद्ध है।

काल तो परम संकेत और ज्ञानी है।

काल तो परम तत्व का चक्र है।

काल निडर और निर्देशक है।

काल तो सर्जन और विसर्जन है।

काल तो परमो उद्धारक है।

काल तो वंदनीय और पूजनीय है।

काल तो आनंद है।

हम क्या है और कैसे है? यही समझना आवश्यक है।

**"Vibrant Pushti"**

अनोखी अतूट रीत को हम पल पल संकोच कराय

समज नासमझ नासमझ समझ हर बार करार कराय

कैसी है यह संस्कृति रीत की जो करे वह पस्ताय

क्यूँ?

क्यूँकी नहीं पहचान नहीं भाव नहीं ज्ञान सत्य सिचंन की

जो बार बार अंध नफरत अविश्वास सौदा होता जाय

कैसे है हम मतवाले जो हर रीत से धोखा खाय

खुद तुटे औरों को भी तोडे ऐसे व्यवहारों बंधाय

नजर अंधी विचार अशुद्ध वन वन भटका जाय

कौन प्रीत कौन रीत कौन आत्म जुडा जाय

करु बिनती

हे जग बंधु! प्रीत रीत ही है अनोखी जो निरंतर आनंद लूटाय

नहीं खेलना है पल के सुख से जो घट घट जीवन पस्ताय

जागो जगावो सत् प्रीत जो सृष्टि मधुर हो जाय।

विचार मधुरम् शिक्षा मधुरम् भाव मधुरम् ज्ञान मधुरम्

कृति मधुरम् गति मधुरम् तृप्ति मधुरम् सृष्टि मधुरम्

गुंजन मधुरा पूजन मधुरा अर्चन मधुरा सर्जन मधुरा

गाये मधुरा पुकारे मधुरा नाचें मधुरा लूटे मधुरा

मधुराधीपते रखीलं मधुरम्।

**"Vibrant Pushti"**

संसार की उलझनों में ऐसा उलझा हूँ की संसार में मैं जी रहा हूँ या मुझ में संसार

विचारों के वमळों में ऐसा खोया हूँ की मैं विचार खोजता हूँ या विचारों मुझे खोजते है

रीति रिवाजों के भंवर में उतरा हूँ ऐसे की रीति रिवाज मुझसे होते है या रीति रिवाज से मै हूँ

जीवन की मायाजाल में ऐसा फसा हूँ की मायाजाल मुझे डूबो लेगी या मैं ही मायावी हो जाऊंगा

कैसी है यह पद्धति जगत की जो छूये वह उनका होता जाय

यही पद्धति में खुद जागे तो जगत छूटता जाय।

**"Vibrant Pushti"**

कैसे घिरे है संसार की घट माळ से

जितनी सुलझाये उतनी उलझें

खुद से मिले खुद की सोच से उलझें

ओरों को मिले खुद की रीति में उलझें

कैसे कैसे रंग तरंग में लपटाये

मैं सच्चा तुम सच्चे सच सच अंतरंग लूटाये

कभी न मिटे कभी न तूटे गहरा घूटांता जाये

धर्म छूये निस्वार्थ चरित्र छूये फिर भी मन गभराये

शास्त्र पढें ऐकांत पढें फिर भी तन मन धन गिराये

चरण पडे शरण स्वीकारें फिर भी आत्म रोता जाये

कौनसा राह कौनसी मंजिल ढूँढे कैसे किसे पुकारें

जीते जीते मरते रहतें मरते मरते जगत नैया हंकारे

साँवरे स्मरण से पल पल घूंटे वहीं संसार पार कराये

**"Vibrant Pushti"**

यह सांसें है जगत के अज्ञान जलाने को

यह तन है जगत में अंधकार मिटाने को

यह मन है जगत में सुंदरता फैलाने को

यह अक्षर की पुकार है जगत को संस्कृत करने को

यह प्रीत है जगत को अमृत करने को

यह जीवन है जगत को जागृत करने को

क्या क्या कर रहे है हम?

कितनी सामान्यता में है हम?

एक चक्कर लगाने की अदा में कितने जन्म ले रहे है हम?

जीवन घडने की बजाय जीवन घटाते जा रहे है हम।

खुद को मिटाकर क्या क्या उजागर करते है हम?

जागना जिंदगी की राह है।

जागना जिंदगी की रीत है।

जागना जिंदगी की गति है।

जागना जिंदगी की मति है।

जागना जिंदगी की कृति है।

जागना जिंदगी की वृत्ति है।

जागना जिदंगी की संस्कृति है।

**"Vibrant Pushti"**

जीवन तो जीवन है

जीवन को जिंदा रखना है

जीवन जगत की सोच से नहीं जीवन जीवन धरने वाले की सोच से जीना है

जीवन धरने वाले की सोच जीवन धराने वाले के सिद्धांत पहचानने से होता है

जीवन धराने वाला जीवन सिंचन भी करता है और जीवन जीना भी शिखाता है

जीवन का सिंचन और जीवन जीना का शिक्षण जीवन धराने वाले के जीवन चरित्र से होता है

जीवन धरने वाला सदा जीवन धराने वालें से जुडने का प्रयत्न करे तो जीवन जीने की रीत पा सकते है

जीवन जीने की रीत पा ने से निभाते जाना है

जीवन निभाते निभाते जीवन में जीने का मूल आधार जागृत होता है

जीवन का मूल आधार से जीवन के हर साधनों से होता है

जीवन के साधन है तन मन और धन है

जीवन में यही तन मन धन जीवन की आंतरिक और बाहय योग्यता प्रदान करता है

जीवन की यही योग्यता हमें आध्यात्मिक जीवन के मार्ग पर स्थिर करता है।

**"Vibrant Pushti"**

जीवन का खेल निराला

जो भी खेलो जैसे भी खेलो

हर बार हारते जाना

आया हूँ कुछ ऐसा लेके

जो मुझे बार बार खेलने धकेले

मैं खेलू खेल जगत से

जो बार बार नई रीत दिखाये

मन से खेलु तो भी हारु

तन से खेलु तो भी हारु

कैसे कैसे नियम अन्जाने

हर नियम से हारता जाऊ

शिख के खेलु समझ के खेलु

कोई न कोई से तो मैं हारु

कैसे यहाँ मतवाले रास्ते

न कभी से जीत न पाऊ

धर्म कहे मुझे जोडके खेलो

संस्कार कहे मुझे अपना के खेलो

कैसी आटीघूटी में खिलाये

हार कर भी हराये

क्या क्या मुखौटा दिखाये

इस बार जीतेंगे

इस बार हरायेंगे

हर हिम्मत जुटाके खेला

फिरभी हाथ पसार कर बैठा

छूट गया सब जो लाया था

लूट गया सब जो संभाला था

तूट गया सब जो बांधा था

शरण में आया रखवाला समझ कर

पुष्टि प्रभा को दूर से छू छू कर

तु ही जगा कृष्ण हो कर

तु ही सिंच यमुना हो कर

तु ही सिद्धांत जता वल्लभ हो कर

तु ही मार्ग खोज गिरिराज हो कर

मुझे पाना है तुझे पुष्टि प्रीत पा कर

**"Vibrant Pushti"**

जबसे जन्म पाया है तबसे जीवन तक हमारे साथ जो जो भी है वह सर्वोत्तम है।

हमारे अंदर बिराजते प्राण प्रिय आत्मा यह स्वयं परमात्मा का अंश है, यह अंश ऐसे वैसे नहीं है। हम चाहे कोई वृत्ति या प्रवृति से पैदा हुए हो। पर यह अंश अलौकिक है। यही अंश को पंच महाभूत तत्वों से समेटा है तन से यह पंच महाभूत तत्वों की रचना भी अलौकिकता से है।

यही अंश और तन के साथ प्रकृति पूर्णता से जुडी है, वह भी अलौकिक है।

हर तरफ हमारे निकट अलौकिकता है तो हमें तो पुरुषार्थ करके शिक्षण, संस्कार ग्रहण करके जीवन को अलौकिक करना है।

क्या हम अपनी हर इन्द्रियों से शुद्ध और सत्य की पहचान नहीं कर सकते है?

नयनों से पुरुषार्थ जगत में सर्वोत्तम व्यक्ति - भक्त, संत, ऋषि, वैज्ञानिक, अधिकारी, तजज्ञ, आदि. .... तो हम क्यूँ नहीं?

**"Vibrant Pushti"**

हम हममें खुदको बार बार झाखतें है

हम हमें खुदको बार बार तरासते है

हम हमें खुदको बार बार पूछते है

हम हमें खुदको बार बार तडपाते है

हम हमें खुदसे बार बार बिछडते है

हम हमें खुदको बार बार जुडते है

हम हमें पहचान सके

हमारी अंदर क्या है

हम हमसे कैसे है

हम हममें क्या सुधारना है

हम हमारे बिन रह पायेंगे

हम हमारा विरह कैसे सहे

हमसे हमारा मिलन कैसा है

**"Vibrant Pushti"**
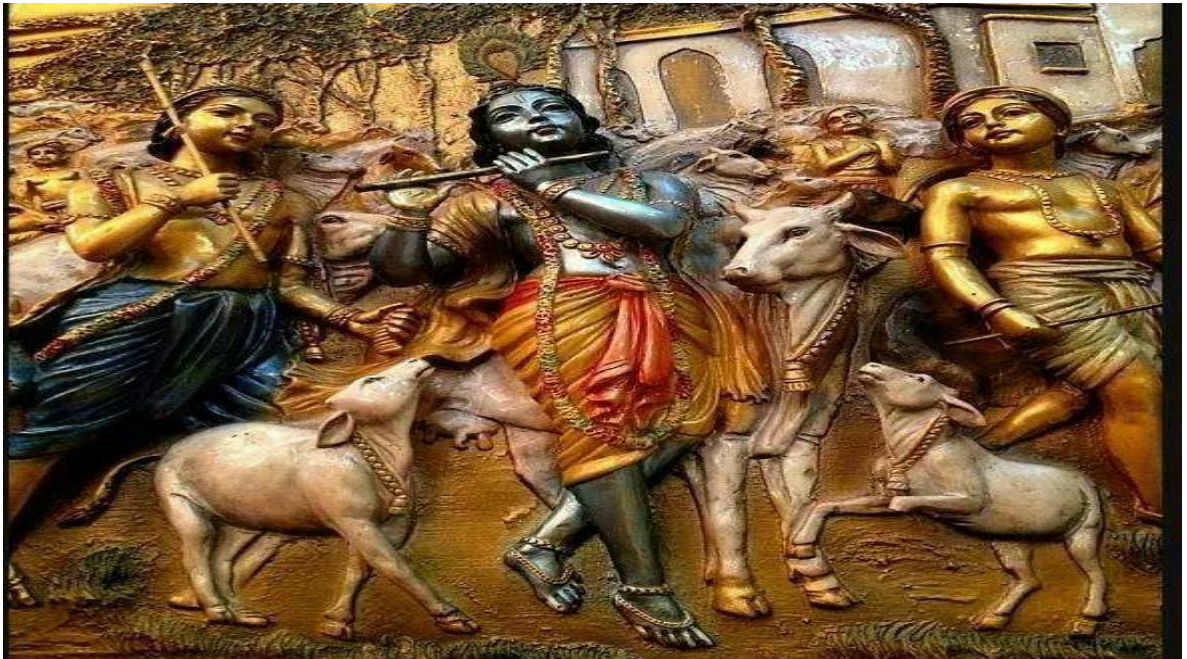
यह सोचना

हममें विचार कैसे जागते है?

हममें कार्य कैसे करने की रीत जागती है?

जो विचार जागे, जो कार्य करने की रीत जागे हम ऐसे है। ऐसा हमारा जीवन है, ऐसा हमारा संसार है, ऐसा हमारा जगत है, ऐसा हमारा समाज है, ऐसा हमारा देश है।

कहीं बार तय किया परिवर्तन करता हूँ पर नहीं होता है और आता है, क्यूंकि हम जुड चूके है ऐसी धाराओं से जो हमें यही पीने में खुशी मिलती है, हम डूब चूके है ऐसे सागर में जो उनमें खींचे ही रहते है।

यह एक सत्य है जो संकल्प करते है तो परिवर्तन करते ही है। खुद के विचार को संस्कृत करदो योग्य नियमों से जो हम शिखेंगे योग्य नियमन जीवन चरित्रों से, योग्य नियमन धर्म धारा से। न सोचों मैं यह जाती से हूँ, यह समाज से हूँ, यह धर्म प्रणालिका से हूँ।

सोचों यही जो योग्य है, सत्य है। तब ही हमारे विचार शुद्ध होंगे और क्रिया सार्थक होगी।

**"Vibrant Pushti"**
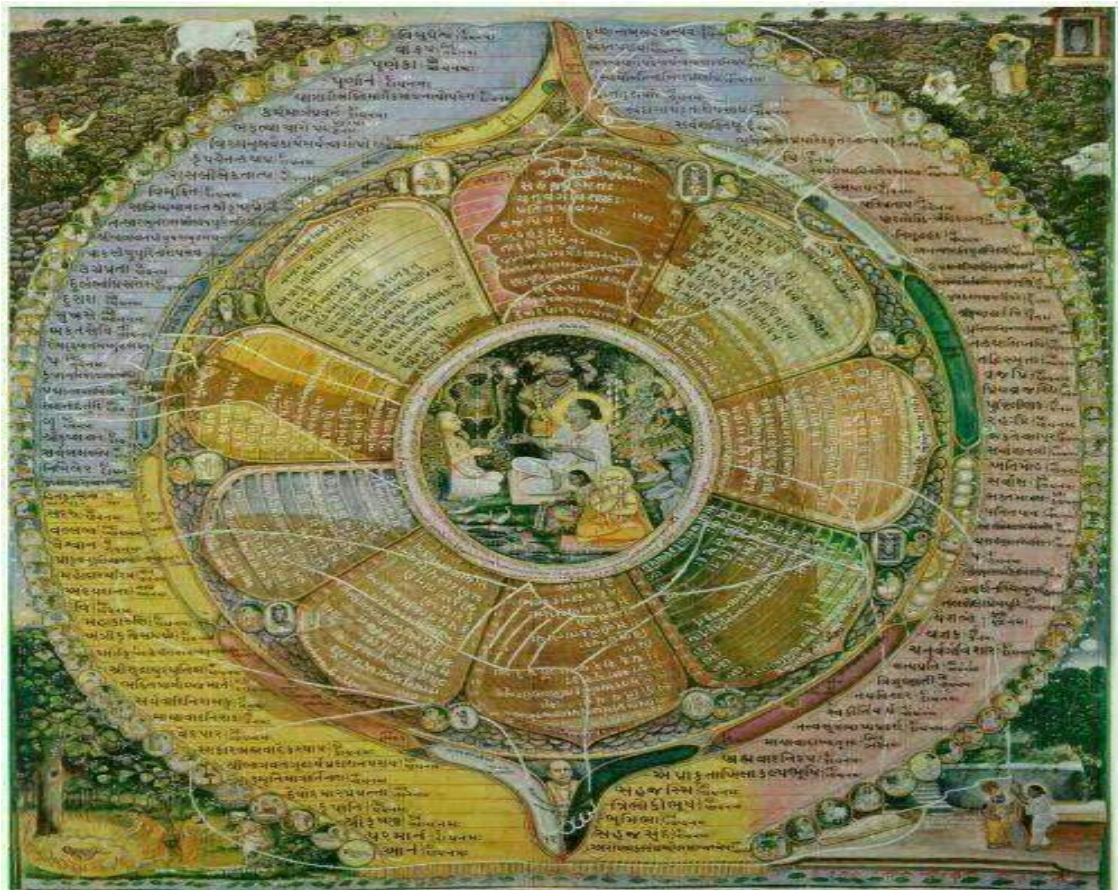
"धर्म" क्या है?

"धर्म" क्यूँ है?

"धर्म" का संस्थापन कौन करता है?

हम सर्वे ने पढा है और सुना है

"श्री मद् भगवत गीता" में

"श्री कृष्ण" कहते है

"धर्म संस्थापय् नाथाय्

संमभवामी युगे युगे"

इसका अर्थ है - जब भी सृष्टि पर धर्म का रक्षण और धर्म की स्थापना करनी होगी मैं जन्म धारण करता रहूँगा और करता हूँ।

आज के युग का धर्म क्या है?

हमारा धर्म क्या है?

हम कौनसे धर्म को धारण किये हुए है?

हमारी संस्कृति कौनसे धर्म से जुडी है?

हमारी जीवन शैली कौनसे धर्म के बंधारण से संचालित है?

**"Vibrant Pushti"**

धर्म क्या है?

जो नियमन आंतरिक और बाह्य जागृतता का उद्दीपन करे और जो ज्योति से हमारा जीवन उजागर हो कर हमारे सर्व तत्वों को आनंद से जुड कर परमानंद में परिवर्तन करे वह नियमन को धर्म कहते है।

जो नियमन खुद के मन, तन, चित्त, को योग्य दिशा के लिए मार्गदर्शन करे जिससे तन, मन, चित्त की पहचान हो और यही साधनों से आंतर ज्योति से जुडते जुडते हमारा परिवर्तन अंशी (परमात्मा) में संयोजित हो, यह संस्कृति को धर्म कहते है।

धर्म का नियमन एक है, रीत भिन्न प्रकार की है। जो जीव जैसी प्रकृति का वैसे उनका संतुलन। हमारी संस्कृति में कहीं प्रकार की रीतें है, हमें हमारी खुद की योग्यता से धर्म के रीत का चयन करना है।

पर सच कहे यहां ही हम भटक जाते है। यह भटकना होता है हमारे मूल संस्कार, मूल शिक्षा, परिस्थिति और संजोग से हमने घडी हुई हमारी स्वार्थ वृत्ति, जो हमें हमारा नियमन से भटकाता है और हम कहीं नियमनों में या ने भिन्न प्रकार की रीतों में फस जाते है।

आज यह मान्यता तो कल अलग, फिर अलग और फिर अलग और हम मूल धर्म नियमन रीत से भटक गये, और फिर तो बहाने ही बहाने!

परिस्थिति ही परिस्थिती!

संजोग ही संजोग!

न मैं किसीका और न कोई किसीका!

कहीं रिश्तों में भटके!

कहीं रीत रिवाजों में भटके!

कहीं बंधन में भटके!

कहीं अंधश्रद्धा में भटके!

बस घुमते चले घुमाते चले!

जूठ का दामन ओढते चले!

न कोई खुद का सुनता है!

न कोई संस्कृति का सुनता है!

न कोई कक्षा है न कोई संयम है!

बस तुटते जाना, तोडते जाना

यह भंवर को गहरा करते जाना।

क्या यही है हमारा धर्म?

जागो जगाये

यह सूरज हर रोज उगते हुए!

यह धरती हर रोज खिलते हुए!

यह आकाश हर रोज परिवर्तन करते हुए!

यह सागर हर रोज सिंचते हुए!

रह वायु हर रोज स्पर्श करते हुए!

**"Vibrant Pushti"**

धर्म है तो ही हम सलामत है।

धर्म नहीं तो हम कुछ भी नहीं है।

धर्म नियमन से ही हम अपने आप को पहचान सकते है, शिक्षा प्राप्त कर सकते है, संस्कार सिंचन कर सकते है, अपनी आंतरिक और बाह्य प्रकृति और सृष्टि को जानकर उनसे रह सकते है, योग्य उपयोग कर सकते है।

धर्म एक ज्योत है।

धर्म एक मार्ग है।

धर्म एक योग्य मित्र है।

धर्म एक योग्य विश्वास है।

धर्म एक विशुद्ध संस्कार है।

धर्म हर एक विडंबना, हर एक तकलीफ को दूर करने का साधन है।

धर्म एक शस्त्र है जिससे हम सांसारिक राक्षसों का विनाश कर सकते है।

धर्म एक ज्योति है जो सूर्य से एक कर सकते है।

धर्म एक विज्ञान है जिससे ब्रह्मांड के हर रहस्य खोज सकते है।

धर्म ही ऐसा परिवर्तन है जो अशक्य को शक्य कर सकता है।

धर्म एक शक्ति है जिससे जगत की हर शक्ति प्रदान कर सकते है।

धर्म ही आराधना है जो हमें काल की संस्कृति में निर्भय और निरंतर हर सिद्धि प्राप्त करवा सकता है।

धर्म ही सत्य है जो सत्-चित्त-आनंद अपने अंदर जागृत करता है।

धर्म ही सूर्य है जो मन के, तन के और जन्मों के अंधकार को नष्ट करता है।

धर्म ही प्रेम का सागर है जो निरंतर प्रीत की यमुना और मुक्ति की गंगा रच सकता है।

धर्म ही पूर्णता प्रदान कर सकता है।

धर्म ही सेवा है, धर्म ही ज्ञान है, धर्म ही भक्ति है, धर्म ही भाव है।

बिना धर्म हम अस्तित्व नहीं

बिना धर्म हम जीवन नहीं

बिना धर्म हम कुछ भी नहीं

इसलिए

अगर

खुद की पाखंडता से धर्म से खेले

खुद की निचता से धर्म से व्यापार करे

खुद की पहचान के लिए धर्म का सहारा ले

खुद का अहंकार से धर्म का नियमन तोडे

जो धर्म का आडंबर रच कर समाज को अधोगति के मार्ग पर ले जाये

वह राक्षस है, हैवान है, दुष्ट है, पापी है।

ऐसे राक्षस का, ऐसे हैवान का, ऐसे दुष्ट का, ऐसे पापी का तन मन और धन से साथ देना भी अधर्म है।

उनका तत्काल विनाश करे,

ऐसे तत्वों को जड मूल से नाश करे,

धर्म से खुद को ऐसा करदो

जो पल पल धर्म में जागे

जो जीवन का दुख दारिद्रय भगाये

जो जीवन को सफल बनाये

जो आत्म को परमात्मा से जुडाये।

**"Vibrant Pushti"**

सुंदर जन्म से सुंदर विचार

सुंदर क्रिया से सुंदर तन मन

सुंदर धन से सुंदर जीवन

सुंदर प्रकृति से सुंदर सृष्टि

सुंदर जगत से सुंदर आत्मा

सुंदर परमात्मा से सुंदर एकात्म

सुंदर सुंदर सुंदर तत्व

सुंदर सुंदर सुंदर सर्वत्र

सुंदर से मधुर जागे

जागते जागते मधुसुदन प्रकटे

प्राकट्य प्रीत की रीत निराली

परम प्रेम से व्यापक व्यापे

रीत सुंदरता की है अनोखी

सुंदर सुंदर ओहहह! सुंदर श्याम!

**"Vibrant Pushti"**

हे मानव!

तुझे सर्व श्रेष्ठ करने

तुझे सर्वोच्च करने

तुझे सर्वोत्तम करने

तुझे सर्वाधिक करने

हम क्या क्या नहीं करते

सूरज कहने लगा

चंद्र कहने लगा

तारे कहने लगे

नक्षत्र कहने लगे

बादल कहने लगे

आकाश कहने लगा

जल कहने लगे

सागर कहने लगा

नदी कहने लगी

पर्वत कहने लगे

वनस्पति कहने लगे

फूल कहने लगे

अन्न कहने लगे

खनिज संपत्ति कहने लगे

धरती कहने लगी

वायु कहने लगा

पंखी कहने लगे

पशु कहने लगे

जगत में रहते हर जीव कहने लगा

हम तो न्योछावर होते है बार बार

जगाने ज्योत उत्कृष्ट जीवन के लिए

जगाने ज्योत संस्कृति जगाने के लिए

जगाने ज्योत परम आनंद जगाने के लिए

न हम तेरे है या न हम किसीके है

हम तो है केवल तुममें श्री प्रभुत्व जगाने के लिए

**"Vibrant Pushti"**

"नारायण"

न+अर+अयन = नारायण

न = नहीं है।

क्या नहीं है - अर

अर = दोष, अर = दुश्मन,

अर = कष्ट, दु:ख, दर्द, अज्ञान

अयन = स्थान-स्थिर-स्थापित करना।

जो पुरुष तत्व में दोष-दुश्मन-अज्ञान-कष्ट-दु:ख, दर्द नहीं है वह तत्व नार है।

यह तत्व में दोष स्थापित नहीं होते है

यह तत्व से दु:ख नहीं जागता है

यह तत्व से कष्ट दूर रहता है

यह तत्व से दर्द नहीं उदभवता है

यह तत्व से दुश्मन नहीं होता है

यह तत्व से अज्ञान नहीं रहता है

या ने

जो तत्व में मुक्ति है

जो तत्व में भक्ति है

जो तत्व में शक्ति है

जो तत्व में प्रकृति है

जो तत्व मे सृष्टि है

जो तत्व में कृति है

जो तत्व मेें अनुभूति है

जो तत्व में स्मृति है

जो तत्व में विश्रुति है

जो तत्व में प्रीति है

वही तत्व

जो तत्व से दोष मुक्त होते है

जो तत्व से दु:ख निवारण होता है

जो तत्व से कष्ट प्राप्त नहीं होता है

जो तत्व से दर्द मिट जाता है

जो तत्व से दुश्मन का नाश होता है

जो तत्व से अज्ञान दूर भागता है

या ने

जो तत्व से केवल विशुद्धि पाते है

जो तत्व से केवल पवित्रता पाते है

जो तत्व से केवल प्रकाश पाते है

जो तत्व से केवल आनंद पाते है

जो तत्व से केवल सत्य पाते है

जो तत्व से केवल प्रीत पाते है

यह तत्व "नारायण" है।

श्रीमन् नारायण नारायण हरि हरि।

**"Vibrant Pushti"**

हर सत्य की रीत है जीवन क्यूँ असत्य अपनाये

हर धर्म की शिक्षा है जीवन क्यूँ अधर्म अपनाये

हर जन्म की प्रक्रिया है जीवन क्यूँ असार्थक बनाये

हर योनि से पाया ज्ञान मानव योनि क्यूँ अशुद्ध रचाये

मानव से मन को स्थिर करके आत्म से परमात्मा मिलाये

यही है मानव जीवन की रीत जो तन मन धन योग्य कहलाये

**"Vibrant Pushti"**

न निर्धन हूँ, न धनवान हूँ।

न उच्च हूँ, न निच हूँ।

न दु:ख हूँ, न सुख हूँ।

न पाप हूँ, न पुण्य हूँ।

न मन हूँ, न तन हूँ।

न उत्तम हूँ, न बूरा हूँ।

न प्रीत हूँ, न नफरत हूँ।

न विरह हूँ, न मिलन हूँ।

न साथ हूँ, न राह हूँ।

न भाव हूँ, न ज्ञान हूँ।

न याद हूँ, न भूल हूँ।

केवल केवल हूँ।

हे! सूरज की किरण!

मैं मैं हूँ और मैं तुझमें हूँ।

**"Vibrant Pushti"**

कितना ऊंचा संस्कार हमारा घडे बौद्ध जैन हिन्दुत्व

जो एक सर्वोत्तम रंग उगाये

कितना उंचा शिक्षण हमारा घडे शंकर रामा माधव निम्बार्क वल्लभ

जो एक सर्वोत्तम धर्मनीति जगाये

कितना उंचा विचार हमारा घडे धरती आकाश सागर हिमालय

जो एक सर्वोत्तम संघ रचाये

कितना उंचा आदर्श हमारा घडे नरसिंह मीरा सूर तुलसी चैतन्य

जो एक सर्वोत्तम मंत्र पढाये

कितना उंचा जीवन हमारा घडे गंगा यमुना नर्मदे गोदावरी कावेरी

जो एक सर्वोत्तम सिंचन पिलायें

कितना उंचा साथ हमारा घडे हिन्दु शिख मुस्लिम इसाई पारसी

जो एक सर्वोत्तम हिन्दुस्थान बनाये

**"Vibrant Pushti"**

यही धरती है यही आसमान है

यही सूरज है यही चाँद है

यही वायु है यही पर्वत है

यही नदी है यही सागर है

यही मानव है यही वनस्पति है

यही पशु है यही पंखी है

तो भी कैसे कैसे पैदा होते है जंतु

जो न मरते है पर मारते मारते रहते है

कैसे पैदा होते है जंतु

कितनी नयी नयी सलामती ढूँढी

कितने नये नये साधन ढूँढे

कितनी नयी नयी पदवी धारी

पर जंतु ने न खुद को मारा

मारे सारे मानव को

मच्छर बनके

कीटक बनके

मानव बनके

कैसे कैसे रोग रचाये

कैसे कैसे संजोग रचाये

मारना मारना और मारना

जितने गुनी उतनी औषधि

जितनी औषधि उतने जंतु

कहा कहा पहूँचे

निष्ठुर होता खुदगर्जी होता

मरता मरता जीता जाय

सच्चा मार्ग न अपनाया कभी

यु ही जंतु तोडता जाय मारता जाय

जाग जा! संभल जा! कुछ तो सुधर जा मानव!

जितना जोर से दौडेगा जगत में

उतना ही जोर से मरेगा

नहीं है तेरा नहीं है किसीका

सबकुछ यही चुकाना छोडना

पल पल देखे कितने योग

फिरभी न संभाले खुद के संजोग

कितना मूर्ख है तु मानव!

जाग जा! जाग जा! जाग जा!

**"Vibrant Pushti"**

"श्रीप्रभु" को कैसे पाया जाय?

"श्रीप्रभु" के नाम स्वरुप को कैसे पहचाना जाय?

"श्रीप्रभु" के स्पर्श की अनुभूति कैसे पायी जाय?

"श्रीप्रभु" हम पर कृपा कर रहे कैसे समझा जाय?

"श्रीप्रभु" के हम है ऐसे कैसे समझा जाय?

"श्रीप्रभु" अपनी निरोधलीला में हमें खिंचते है कैसे समझा जाय?

"श्रीप्रभु" के दासत्व को कैसे पाया जाय?

**"श्रीप्रभु" को कैसे पाया जाय?**

हमारी संस्कृति में, हमारे शास्त्रों में, हमारे ऋषिओं, आचार्योंश्री, ने कहीं चिंतन, खुद की केलवनी, तपश्चर्या, आंतरिक प्रज्वलता, आत्मीय जिज्ञासा, वैज्ञानिक शिक्षा, जगत नियमन और प्रकृति नियमन के आधारित कहीं किरणों जगाये जगत नियामक को पहचानने और सृष्टि सर्जन का उद्देश्य।

खुद का आत्मीय तत्व को उजागर करके परम आत्मीय तत्व की पहचान और संयोजन करना।

जगत नियंता और जगत की रचना का सत्य। परमात्मा और परमात्मा रचित सर्वथा का सत्य याने श्रीप्रभु सत्य और श्रीप्रभु के रचित जगत भी सत्य है।

यह सत्य की प्राथमिकता के लिए श्रीप्रभु को पहचानना अति आवश्यक है। श्रीप्रभु की पहचान से ही हम समझ पायेंगे उन्हें क्यूँ पाना?

हम खुद एक मनुष्य जो परमात्मा के अंश है, क्यूँकि हमें बसी हुई आत्मा ही प्रमाणित है।

यह आत्मा ही एक ऐसा सत्य है जो हमें सदा जागृत और तन मन धन साधनों का योग्य उपयोग करके सर्वे तत्वों को पहचान कर खुद को ऐसा घटना जो घट घट से हम परमात्मा को पहचाने।

यही सत्य है।

यह परमात्मा को कैसे पहचाने?

उनकी हर रचना से

उनके हर सिद्धांत से

उनके हर उदेश्य से

उनके हर रीत से

उनके हर नियमन से

उनकी हर लीला से

उनके हर ज्ञान से

उनके हर भाव से

उनके स्वभाव से

उनके चरित्र से

उनके किये हुए कृपा निधान से

उनके निकट परम आत्मीय तत्वों से

उनके हर तंत्र मंत्र और यंत्र से

यही तो सरल पद्धति है जिससे आज काही ऋषिओं, आचार्योंश्री, संतो, भक्तों और प्रेमीओं को जानना, समझना और पहचान कर खुद को संस्कृत करना।

**"Vibrant Pushti"**
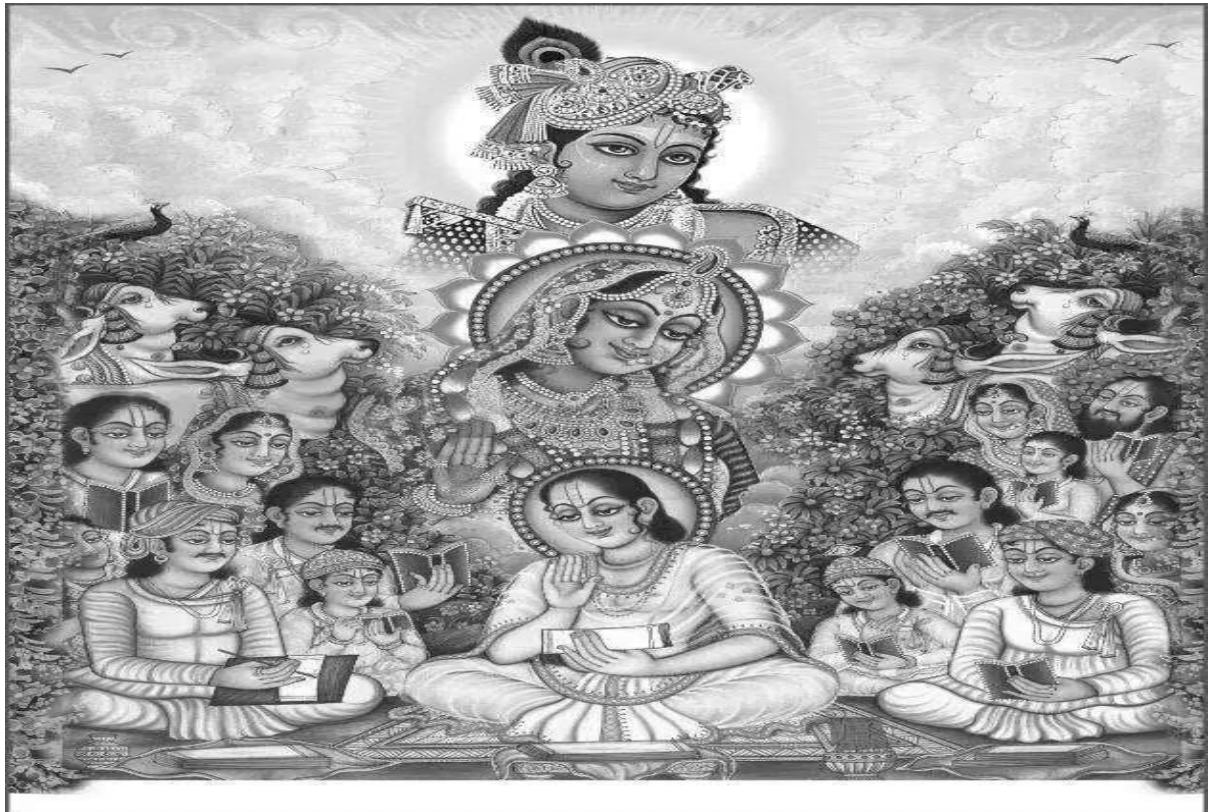
मानव से मानव मिले तो खिले सदगुणों के फूल

महके बगीया जीवन की संस्कार जागे मधुर

आप कहे और हम सुने या हम लिखें और आप पढे

संस्कृति रचाय विचार जगाय कृति हो अदभुत

घट घट मिटे हर आत्म का परमात्मा मिलन होय

**"Vibrant Pushti"**

देखता हूँ जब जब आईना

क्या क्या देखने में आया

हर नजर में भिन्नता

हर नजारा में भिन्नता

क्या क्या हाल रचाया

अक्षर पढें तो दिक्कत

अक्षर लिखें तो दिक्कत

अक्षर कहें तो दिक्कत

अक्षर सुनें तो दिक्कत

अक्षर सोंचे तो दिक्कत

अक्षर करें तो दिक्कत

कैसा है यह मतवाला जीवन

हर दिशा से गिरता जाये

कैसी है यह तस्वीर मेरी

मुझे मेरी समझ न आये

**"Vibrant Pushti"**

"दर्शन"

दर्शन - द  या ने द्वार

र या ने रज

श या ने शृंगार

न या ने नित्य

जो द्वार पर पुष्टि रज का शृंगार नित्य पाये उन्हें दर्शन कहते है।

द्वार - जो द्वार पर सात्विकता हो

जो द्वार पर आध्यात्मिकता हो

जो द्वार पर विशुद्धता हो

जो द्वार पर पवित्रता हो

जो द्वार पर एकात्मता हो

जो द्वार पर विश्वास हो

जो द्वार पर कृतज्ञता हो

जो द्वार पर शरण विनय हो

जो द्वार पर दया हो

जो द्वार पर क्षमा हो

जो द्वार पर ज्ञान हो

जो द्वार पर तीव्रता हो

जो द्वार पर विरह हो

जो द्वार पर प्रीत हो

वह द्वार संस्कृत सामर्थ्य की रज सृजन करता है, जो रज स्पर्श से पतित पावन हो जाता है।

जो रज से साक्षरता का सिंचन होता है।

जो रज से माधुर्य की महक उठती है।

जो रज से सौंदर्य के रंग बिखरते है।

जो रज से तनुनवत्व की उर्जा उत्स होती है।

जो रज से निष्ठा का स्पंदन खिलतें है।

जो रज से आत्म निवेदन जागता है।

जो रज से आंतरिक सलामती आयोजित होती है।

जो रज से परब्रह्म का स्पर्श होता है।

वहां नित्य उत्सव शृंगार सरगम गाते - नाचते - बाजते - सजते रहते है।

जिससे तन मन धन का योग से यज्ञ रचाता है और परब्रह्म प्रकट हो कर आनंद परमानंद लूटते है और लूटाते है उन्हें "दर्शन" कहते है।

"दर्शन" प्रमाण है अपने आंतरिक और बाह्य विश्वास का। हम विचार, हम हर भूमिका, हम हमारा परिवर्तन, हमारे ज्ञान में वृद्धि, हमारे कर्म की रीत इन्हीं से घडाती है।

दर्शन तो एक ऐसा साधन है जो साधन से हम अपनी स्मृति से खुद को कहीं बार उत्तेजित करते है, इतिहास रचा देते है, सुयोजित व्यवस्था बना देते है।

एक झलक एक विस्मरणीय घटमाळ बना देता है।

हम नाथद्वारा "श्री नाथजी" दर्शन एक प्रमाण है।

हम अकेले भी बैठते है तो यह दर्शन ही हमें कहीं धारा में डूबो देता है।

दर्शन कितना सुदृढ और सुसंगत है हमारे जीवन का।

श्रीप्रभु के दर्शन को तो हम क्या कहे!

दर्शन के कहीं है रंग तरंग, कहीं है संग संगम, कहीं है औषध आचरण।

जीवन का प्राधान्य इनसे जागता है खिलता है।

हमारे खुद का सिंचन इनसे जुडा है।

हर दर्शन जीवन संसद

जब जब समझे होगें निहाले

साक्षरता की रीत रचे जगत ब्रह्मांड के

सार्थकता की यही कडी है

**"Vibrant Pushti"**

"दु:ख" क्या है? क्यूँ है? कैसे है?

हर मानसिकता, धार्मिकता, शारीरिकता दु:ख से जुडी है। पता नहीं जबसे जन्म धारण करते है साथ साथ दु:ख की भूमिका भी घडते है। गाते रहते है, मुस्कुराते रहते है, लडते रहते है, छूपा रखते है, जीते रहते है दु:खों के साथ शरीर की आखरी सांस तक।

पल से दु:ख, प्रहर से दु:ख, दिन से दु:ख, रात से दु:ख।

भौतिकता से दु:ख, अभौतिकता से दु:ख, ज्ञान से दु:ख, अज्ञान से दु:ख, कर्म से दु:ख, अकर्म से दु:ख, विचार से दु:ख, नविचार से दु:ख, संबंध से दु:ख, एकलता से दु:ख।

नजर जहां जहां वहां दु:ख

स्पर्श जहां जहां वहां दु:ख

रीत जहां जहां वहां दु:ख

मन जहां जहां वहां दु:ख

तन जहां जहां वहां दु:ख

श्वास की हर आहट पर दु:ख

स्वर की हर गूंज पर दु:ख

नयन की हर द्रष्टि पर दु:ख

आत्म की हर गहराई पर दु:ख

प्रीत की हर तृप्ती पर दु:ख

साथ साथ दु:ख

विखुटा विखुटा दु:ख

चिंतन चिंतन दु:ख

बात बात दु:ख

जात जात दु:ख

गति गति दु:ख

मति मति दु:ख

कैसा है यह आसमान दु:ख का जो कहीं भी होय

कैसा है यह वायु दु:ख का जो कहीं भी होय

कैसी है यह कल्पना दु:ख की जो कहीं भी होय

कैसा है यह काल दु:ख का जो कहीं भी होय

कैसी है यह चेतना दु:ख की जो कहीं भी होय

कैसा है यह धर्म दु:ख का जो कहीं भी होय

ओहहह!

जीवन की धटमाळ ऐसी रची है की हम खुद भगवान हो सकते है। हम खुद देव, देवता, संत, भक्त, हो सकते है या ने सात्विक स्वरूप, विशुद्ध स्वरूप, सत्य स्वरूप।

यह धरती, यह सूर्य, यह सागर, यह वायु और यह आकाश हमारे साथी है जो हर घडी हमारे आध्यात्मिक, सांस्कृतिक डोर रचती रहती है जिससे हर घडी आनंद की अनुभूति हो सके। कितनी अनोखी रीत है।

न दु:ख रहे पास

न दु:ख रहे साथ

सदा साथ रचे सुख

सदा साथ रहे सुख

तो फिर दु:ख कैसा?

हाँ! दु:ख तो हम हमारी मानसिकता और शारीरिकता से रचते है। न किसीका साथ है इनमें, न किसीका हाथ है इनमें।

खूद को खुद ही मारते है, खुद खो खुद से ही जीतना जीवन है। यही तो जीवन का पुरुषार्थ है।

**"Vibrant Pushti"**

हे कृष्ण!

हे माता यमुना!

जगत की यह जाल निराली

जो समझे वह न समझा जाय

जो न समझे वह उलझा उलझा जाय

एक मन के अनंत मन जागे

भटक भटक कर तुटता जाय

क्या है जंजाल यह जीवन की

जो हर पल गुंथाता जाय

विशुद्ध अक्षर का अर्थ एक

अद्‌वैत सिद्धांत का धारण एक

बार बार अर्थ घुटाय

बार बार सिद्धांत घडाय

कैसी है यहां विसंगति उलझन

जो हर संग संग घूमराय

शास्त्र भी भिन्न आचरण भी भिन्न

हर कोई भिन्न भिन्न जुडाय

**"Vibrant Pushti"**

मन

मानव

मनुष्य

मन से ही हम मानव कहलाते है

मन से ही हमारी पहचान मनुष्य होती है।

मन कितने भिन्न है, मन की संरचना अभिन्न है।

सच कहे तो हम खुद को मानव या मनुष्य कहते है वह मन की धारणा से है या ने जो जीव तत्व ने मन को रचा है या धारण किया है उन्हें मानव या मनुष्य कहते है और यह मन को हम नहीं जाने और पहचाने तो हम कैसे मानव और मनुष्य समझे?

मन की व्याख्या अदभुत है।

मन अति उत्तम और अलौकिक साधन है मानव या मनुष्य योनि धारकों का।

मन है तो बहुत कुछ अधिक है मन नहीं तो शून्य अवकाश है, निष्क्रियता है।

हर एक मानव या मनुष्य को मन क्या है समझना अति आवश्यक है। शायद आजकल ऐसा लगता है कि आज का मानव या मनुष्य को सही अर्थ में नहीं पहचानता यह अति गंभीर अज्ञान है। मन को ही न पहचाने तो ओर किसकिसको पहचाने?

मन ही न पहचाने तो मानव या मनुष्य जीवन कैसे जीये?

मन ही न पहचाने तो खुद को कैसे पहचाने?

मन ही न पहचाने तो उनकी सोच और क्रिया कैसी होगी?

हम कितने धर्म और कर्म की बातें करे पर मन को न पहचाने तो सबकुछ व्यर्थ है।

**"Vibrant Pushti"**

मन को नहीं जानते और नहीं समझते है तो मन - मन में उदभवते विचार, मन से बांधती मान्यता हम कैसे समझ कर करेंगे? आज हम हर क्षण अपनी विचारधारा और कार्य निर्णय परिवर्तन करते रहते है। क्यूँ?

कैसी जीवन शैली, कैसी जीवन शिक्षा, कैसे जगत के पथ दर्शक, कैसे परिणाम वादी शास्त्रों, कैसे अज्ञान और अधूरप गुरुओं और उनकी चेष्टाओं! अज्ञान की सीमा इतनी ढ्रड है कि हमें हमारी खुद की सीमा, हमारा उद्देश्य, हमारी वृत्ति, हमारी संस्कृति! हमारा संस्कार सिंचन, हमारा माध्यम?

कौन है हमारे साथ और कौन है हमसे नहीं कोई जानता और पहचानता।

हम घूमे और हमें घूमाये!

मन तो हमारा रक्षक है

मन तो हमारा शिक्षक है

मन तो हमारा लक्ष है

मन तो हमारा निष्पक्ष है

मन तो हमारा चक्षु है

मन तो हमारा वटवृक्ष है

मन तो हमारा प्रत्यक्ष है

मन तो हमारा मोक्ष है

मन तो हमारी दिक्षा है

मन तो हमारी जिज्ञासा है

मन को हम क्या क्या समझे?

मन को हम कैसे कैसे केलवते है?

**"Vibrant Pushti"**

"मन - मानव - मनुष्य"

मानव - मन को धारण करने वाला

मनुष्य - मन को उष करने वाला

मन को धारण करना

मन को उष करना

उष करना या ने उदभव करना

उदभव करके धारण करना।

यह उदभव करना - मन को जीतना और जीत कर उन पर सवार होना।

मन को जीतना - अति आवश्यक और उत्तम है।

मन को धारण करके जीना - जीवन योग्य रचना।

हम कितने भाग्यशाली है कि हम तन पाते है - मन धारण करते है और संस्कार सिंचन करते है।

ओहहह! जीवन जन्म सफल हो जाय।

"मन - मानव - मनुष्य" ऐसे नहीं बने है, हमारी अलौकिकता है।

तो.......

**"Vibrant Pushti"**

मन को समझे

तन को समझे

समझे आत्म धारी

धर्म को समझे

समाज को समझे

समझे जीवन धारी

आनी जानी यह जगत से

कैसी है यह दुनिया सारी

लगता है नहीं कोई समझे

यह रीत जीव जगत की

कैसे सत्य की पहचानी?

यु ही जीते चलो

चलते चलते मरते चलो

यह ही जीवन है?

**"Vibrant Pushti"**

"कृपा" कृ = कऊर = कर

कर का अर्थ है करना

क्या करना?

विचार

क्रिया

जो विचार सदाचार हो

जो क्रिया सर्वज्ञ हो

उसे कर्म कहते है।

जो कर्म सर्वोच्चता से होता है

जो कर्म सर्व शरण होता है

जो कर्म सर्व त्यागी होता है

जो कर्म सर्व प्रीत प्रधान होता है

उन्हें "कृ" कहते है।

"पा" प+आ

प - प्रमाणित

प - पारदर्शी

प - प्रज्वलित

प - परमार्थ

प - पुरुषार्थ

प - पवित्र

प - परमानंद

प - पुष्टि

प - पराकाष्ठा

प - प्रकाश

प - प्रीति

प - प्रज्ञान

प - पूर्ण

प - परब्रह्म

पा - पाना याने खुद में जागृत करके "परब्रह्म" का

आ - आविष्कार करना

आ - आशीर्वाद पाना

आ - आराधना करना

जिससे हर जीव को

विरह धरना

दर्शन करना

सुगंध ग्रहना

सेवा स्वीकारना

स्पर्श होना

एकात्म पाना

याने वह मैं हूँ और मैं वह हूँ

हर रीति से........ यह "कृपा" है

**"Vibrant Pushti"**

उठे तरंगे मन में उठे तरंगे तन में

उठे तरंगे जीवन में

उठे किरणें गगन में उठे किरणें अनंत में

उठे किरणें आत्म में

उठे तरंगे हवा में उठे तरंगे सागर में

उठे तरंगे रोम रोम में

उठे स्पंदन गूंज में उठे स्पंदन दर्शन में

उठे स्पंदन स्पर्श में

हर तरंग हमें कहती है

हर किरण हमें जगाती है

हर स्पंदन हमें मिलाती है

कहती है

हर तरंगे तुम्हारे लिए ही है

तुम भी हर पल तरंग बहाओ

जगाती है

हर किरणें तुम्हारे लिए ही है

तुम भी हर पल किरण प्रकटावो

मिलाती है

हर स्पंदन तुम्हारे लिए ही है

तुम भी हर पल स्पंदन खिलाओ

कैसी तरंग

विशुद्धता की जिससे सृष्टि शुद्ध हो जाय

कैसी किरण

सत्कर्म की जिससे सृष्टि पुरुषोत्तम हो जाय

कैसा स्पंदन

प्रीत का जिससे सृष्टि अमृत हो जाय

**"Vibrant Pushti"**

खेलते खेलते हम उनसे खेलते ही गये

हर खेल में हारे

तो भी वह हर बार खेले

खुद को हराने के लिए

अगर हार जाये तो खुद की जीत

अगर जीत जाये तो खुद की हार

हर बार सोच के खेले

आज हारुंगा तो उनका मैं हो जाऊँ

अगर जीत जाऊँ तो भी उन्हें कैसे जीताऊँ

कैसा है यह खेल निराला

पर कोई न जीत पाया

कैसा है यह जीवन का खेल

जो बार बार उन्हें ही पुकारे

जो मेरे दिल में बैठे है।

**"Vibrant Pushti"**
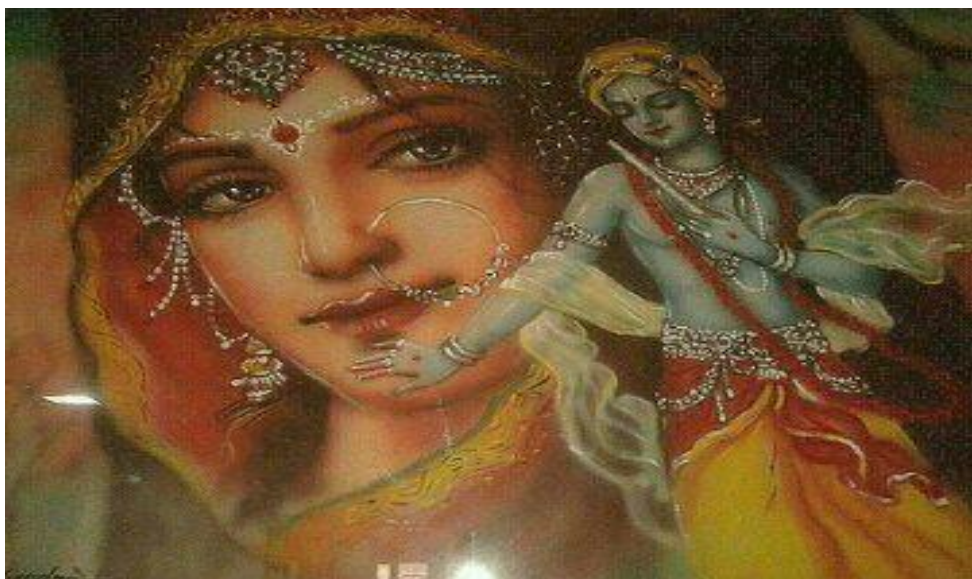
"षोडश" शास्त्र के कहीं पन्नो पर यह शब्द लिखा है। सर्वे आचार्यों ने षोडश रचनाएँ।

षोडश उपचार।

षोडश या ने सोलह

क्यूँ षोडश? यह षोडश क्या है?

षोडश समझना अति आवश्यक है।

षोडश अपने मन से सोचे

षोडश अपने तन से सोचे

षोडश अपने विचार से सोचे

षोडश अपने कार्य से सोचे

षोडश अपने धर्म से सोचे

षोडश अपने संस्कार से सोचे

षोडश अपने आप से सोचे

षोडश अपने कुटुंब से सोचे

षोडश अपने समाज से सोचे

षोडश अपने शिक्षा से सोचे

षोडश अपने चरित्र से सोचे

षोडश अपने ज्ञान से सोचे

षोडश अपने भाव से सोचे

षोडश अपने आत्म से सोचे

षोडश अपने प्रेम से सोचे

षोडश अपने परम से सोचे

षोडश समझेंगे तो षोडश पायेंगे

षोडश से खुद षोडश होंगे

जन्म मरण का चक्कर छोडेंगे

मधुर मधुर शरण पायेंगे

अंशी अंश अपनायेंगे।

यही है षोडश की लीला

रज रज तनुनवत्व रचायेंगे।

**"Vibrant Pushti"**

हमारे मनुष्य जन्म के साथ

हम से हमारा चैतन्य आत्म

के साथ

प्रकृति

पृथ्वी

आकाश

जल

वायु

से

हम रचते है मन

हम संवारते है तन

हम खोजते है सत्य

हम सिंचते है संस्कार

हम पाते है धन

हम खेलते है माया

हम उत्सते है भाव

हम घडते है चरित्र

हम धारते है धर्म

हम करते है योग

हम सृजते है ज्ञान विज्ञान

हम वृद्धते है वंश

हम अनुभवते आनंद

यही है हमारी जीवन लीला

जो निरंतर नित्य अनित्य बहती जाये

खुद से खुद पहचान कर परमानंद लूटाती जाये

**"Vibrant Pushti"**

जगत की हर रीत से हम कुछ शिखते है, समझते है और जीवन घडते है। हर रीत में ऐसे ऐसे स्पर्श है जो स्पर्श से खुद को संत बना सकते है या खुद को शैतान बना सकते है या ऐक सामान्यता या साधारणता भरा हुआ मनुष्य बना सकते है।

हमारे शास्त्रों कहते है, हम बार बार जन्म धारण करते है, ऋणानुवाद संबंध से बंधते बंधते एक अलौकिक आत्मा खुद को घडते घडते परमात्मा को पाते है, पर हम यह नहीं जानते है कि कब होगा ऐसा? कहीं रीते दर्शायी है, जतायी है और घडी हुई है कहीं भूतकाल में जन्में हुए आत्मतत्वों ने। यह आत्मतत्वों में माता पिता, गुरु, कोई संप्रदाय के संत, भक्त और ज्ञानी के चरित्रों और सिद्धांतों हमें मार्गदर्शन करते है।

यहां एक सत्य यही भी है अपनाना - छोडना, अपनाना - सदा ढ्रड रहना। हम जीवन जीते जा रहे है और खुद को समझते जाते है, घडते जाते है। जो खुद को पहचाना वह जीवन उत्कृष्ट कर लिया जो न पहचाना वह सामान्यता या साधारणता में जीता रहा। यही जीवन धारा है।

यही जीवन का सत्य है।

पर........

**"Vibrant Pushti"**

"बसंत"

जिसके रोम रोम में संत बसे हो उसे बसंत कहते है।

जिसके रोम रोम में आनंद बसा हो उसे बसंत कहते है।

जिसके रोम रोम में रंग भरे हो उसे बसंत कहते है।

जिसके मन में उमंग नाचता हो उसे बसंत कहते है।

जिसके तन में अठखेलियाँ की अदा अंगडाईयाँ लेती हो उसे बसंत कहते है।

जिसका जीवन सदा भिन्न भिन्न रंग लूटाता हो उसे बसंत कहते है।

जिसका स्पर्श से रंग रंग अपने में बस जाय उसे बसंत कहते है।

जिसका रंग से आसमान, धरती, वायु, जल रंगीन हो जाय उसे बसंत कहते है।

जिसकी छुवन से आंतर और बाह्य तन मन धन रंगों की उर्मिओं से छा जाये उसे बसंत कहते है।

जिसके आगमन से काम, क्रोध, असमानता मिट जाये उसे बसंत कहते है।

**"Vibrant Pushti"**

न कोई आवाज है जो मेरे रोम रोम को छूये

न कोई साँस है जो मेरे ह्रदय को धडकाये

न कोई नजर है जो मेरे नैनन में बसे

न कोई रब है जो मेरे दिल को रचे

सिवा तेरा इजहार

जो मेरी संपूर्णता है।

**"Vibrant Pushti"**

उत्तम जीवन के घडतर में बचपन से लेकर हम अपने आप में सत्य, शुद्ध, योग्य, और पवित्र जीवन के सिद्धांत और चारित्र्य निभायेंगे, अनुभूत करेंगे, संस्कार सिंचन पायेंगे, सेवा धर्म पारायण की शैली अपनायेंगे तो हमारा कुटुंब, हमारे संतान को जगत की योग्यता, संसार की उच्चता, धर्म संप्रदायों की भिन्नता समझ आयेगी। यही समझता से खुद के जीवन की पहचान होगी और जीवन के साथ साथ जगत और संसार भी समृद्ध होगा।

हम समझते है कि मिलकत, अनेक प्रकार के आभूषणों, गाडी, अच्छे कपडे और सामाजिक होद्दो ही हमारी सार्थकता है तो यह सब हमने ही घडे हुए जीवनशैली के आधारित है।

सत्य तो यही है कि हमारी जीवनशैली जन्म उत्कृष्ट करके जीवन उत्तम करना जिससे जगत और संसार सर्वोत्तम हो, जिससे न कुटुंब तुटे, न धर्म छुटे, न सिद्धांत डूबे, न संतान कुसंगे, न समाज बिगडे, न संसार दु:खे, न जगत खेले, न प्रकृति रुठे, न अन अधिकृत परिस्थिति सर्जे, न सृष्टि प्रकोपे, न जीवन खिले।

आज हम क्यूँ ऐसे है?

आज हमारी जीवनशैली क्यूँ अस्थिर है?

आज हमारी हर सोच अर्थ विहीन क्यूँ है?

आज हमारी आंतरिक क्रिया अयोग्यता क्यूँ रोगी और भोगी बना रही है?

आज हमारी बाह्य क्रिया अविश्वास क्यूँ जगा रही है?

आज हम हर तरह से असलामत क्यूँ है?

आज हम जीवन के हर पहलू में स्वार्थ क्यूँ देख रहे और कर रहे है?

आज हम अपने संतान से क्यूँ बिछड रहे है?

आज हम अपने आप को क्यूँ कोस रहे है?

ऐसे कितने क्यूँ हमने उत्पन्न किये है जिससे .........

**"Vibrant Pushti"**

मैं किसीसे शिखुं

कोई मुझसे शिखें

ऐसे जीवन शिखा जाय

मैं किसीसे जानु

कोई मुझसे जाने

ऐसे जगत जाना जाय

मैं किसीसे सिंचु

कोई मुझसे सिंचे

ऐसे संस्कार सिंचा जाय

मैं किसीसे पूछु

कोई मुझसे पूछे

ऐसे जिज्ञासा पूछा जाय

मैं किसीसे चाहुं

कोई मुझसे चाहें

ऐसे व्यवहार चाहा जाय

मैं किसीसे तुटू

कोई मुझसे तुटे

ऐसे सबकुछ तुटा जाय

मैं किसीसे खेलु

कोई मुझसे खेलें

ऐसे हर रीत खेली जाय

मैं किसीसे जागु

कोई मुझसे जागे

ऐसे विश्वास जागा जाय

ऐसे करें हम एक जगत

ऐसे करें हम एक संस्कृति

ऐसे करें हम एक मार्ग

ऐसे करें हम एक एकता

मैं मधुर कोई मधुर जीवन मधुर

**"Vibrant Pushti"**
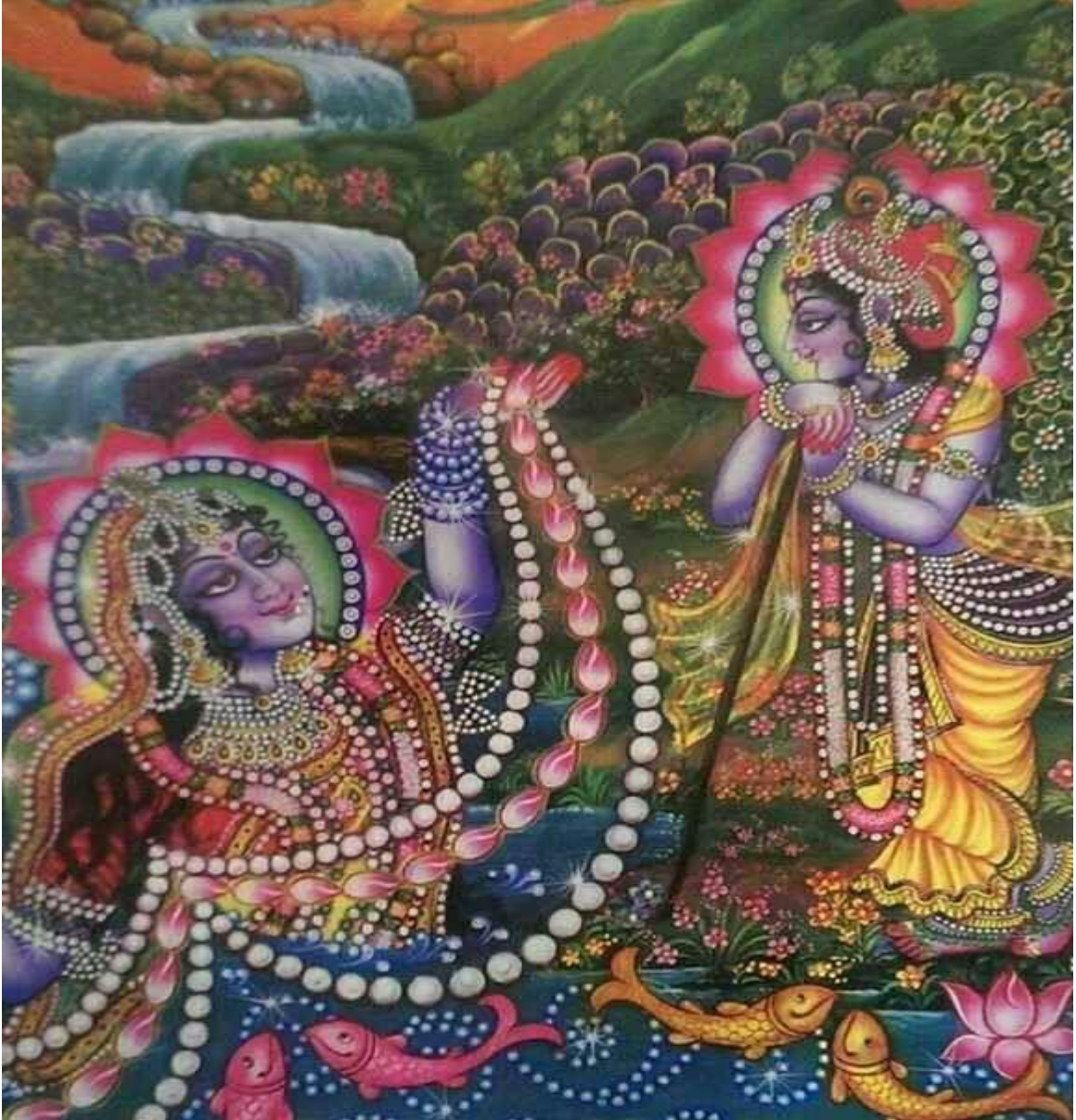
**सकारात्मक पुष्टि स्पंदन**

**सचित्र**

**संस्करण भाग - 2**

**सेवा सत्संग स्पर्श धारा**

**प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara**

**Vibrant Pushti**

**53, सुभाष पार्क सोसायटी**

**संगम चार रास्ता**

**हरणी रोड - वडोदरा - 390006**

**गुजरात - India**

**Email: vibrantpushti@gmail.com**

**Mobile: +91 9327297507**